

अक्षयनिधि तपनो विधि

प्रातः स्मरणीय गुण्णीनी महाराजश्री
सौभाग्यश्रीजीना मद्रूपशशथी.
खभातना सुप्रसिद्ध शेठ अमरचन्द्र प्रेमचन्द्रना सुपुत्र
शेठ छगलशीभाइ अमरचन्द्रनी द्रव्यसहायधी
तमनी सुपुत्री ब्हेन हीराना स्मरणार्थे

१९२५

गणपति विद्यापीठ मद्रूपशशथी

श्रीगणेशाय नमः

बोरसपत्त २४५० मने १९२५ पयसू १९८० प्रत १०००
श्री सुर्यप्रकाश प्रीन्टिंग प्रस टंकशाल-अमदावाद

प्रस्तावना

स्वभावात् वदरना श्रावक समुदायमा सुप्रसिद्ध श्रेष्ठ अमर-
चंद्र प्रेमचंद्रना सुपुत्र श्रेष्ठ छगलशीभाइ अमरचंद्रनी सुपुत्री
व्हेन हीरा के जेओ पोताना कुटुंबना ससर्गथी बालपणधीज
घर्म सस्कारो होइ फक्त १० वरसनी लघुवयमा सवत १९८०
ना श्रावण वृत्ती चौथे घणा उमगथी अक्षयनिधि तपनो
आरंभ कर्यो व्हेन हीराए व्रण एकासणा नोर्विघ्ने सारी रीते
क्रिया सहित कर्या परंतु श्रावण वदी ७ एकाएक ताव आववो
शरु थयो अने ते ताव एवो अमाध्य आव्यो क अनेक
उपायो कर्या छता छेवटे श्रावण-वद् १४ मात्र वार वरसनी
लघु वयमाज शुभ भावनाने अठे काठ घर्म पामो तेथी
तेना कुटुंबमा तेमज तेना मातापीताने घणुंज लागी आव्यु
परंतु तेओ धर्मीष्ट होइ ससारनी विचित्रता समकृता होवाथी
अने प्रसंगोपात तेज स्थळमा रहला परमपूज्य गुरु
णीजी महाराजश्रीसीभाग्यश्रीजीए सदुपदेश आपी तेमना
मनने शाती आपी अने तेमना उपदेशथी तेमना मातापीतानी
एवी इच्छा उत्पन्न यद् के व्हेन हीरा आ अक्षयनिधि तप
करता देवलोक पामीछे तेथी तेना अंत समयनी भावनाने
अनुसरीने तेना श्रेय निमित्ते तेमज तेनी फायमनी यादगिरि

रहेराना हेतुधी आ अक्षयनिधि तपना त्रिधि विधान तथा
 साये-नरपत्नी त्रिधि वीसस्थानकतपनी ज्ञानपचमीनी
 टीवालीना गरणानी विप्रिओ तथा चेत्यवदनो स्तवनो सज्ञायो
 गहुलीओ आट्टि नाखी साये साथे ते व्हेन हीरानो फोटो
 विगर नाखी आ युक्त समाप्त करवामा आवी छे तेमा आपला
 विषयोनी अनुक्रमणीका जीवाथी विशेषे माहिती मलशे विशेषे-
 पमा जणावरानु के आ युक्त परमपूज्य गुण्णीजी महाराजथी
 सौभाग्यश्रीजीना सदुपदेशथी व्हेन हीराना पीताश्रीनी आ-
 र्थीक सहायथी छपारवामा आवी छे जेथी तेना रापी जीवोने
 भेट तगीवज आपरानी छे आ युक्त सुधारवामा सारी रीते
 स्वत राखवामा आवेली छे छता पण दृष्टि दोष अगर प्रेस
 दोष आदिथी काड मुलचुरु रही गइ होय अगर तो जीनाज्ञा
 रिग्द लखाइ गयु होय तो तेनी क्षमा चाहीमीच्छा दृष्टकृत
 देवा पूर्ण सृष्टारी वाचवा भलामण करवामा जाउ छे

एज सुज्ञेशुर्मी वदुना

मिति
 संवत् १९८१ ना
 भागशर वद १०
 ने रथीबार

ली

प्रसिद्ध कर्ता

छंद.

धर्म धारी परोपकारी, अमरचंद्र शुभ नाम छे,
 परमार्थ कामो अति परी, स्त्रीकार्यु स्त्रगतु धाम छे ॥१॥
 पुत्र पात्र पराक्रमी जेनी किर्ति मूर्य समान छे,
 स्वमात शहर श्री सघमा, कर्ण साहस धर्मना धाम छे ॥२॥
 तेमा श्रेष्ठी छगनभाइ ते, सघमा मुगट समान छे,
 पुत्री तेमनी अति पतिप्र, हीरा अमून्य नाम छे ॥ ३ ॥
 रत्नखाणमा रत्न पाव्यु, शोभाव्यु शुभ नाम छे
 वय बारमा तन आदरी, कर्ण सद्गति हाल मुकाम छे ॥४॥

(राग, केशरीया यासु प्रीत करीरे साचाभावथु.)

अमरचंद्र शुभ नाम धर्यु, जे देशविदेशे गवायु,
 धर्म अर्थने गुरुभक्तिमा, अमर नाम धराव्युरे,
 वीर धर्म आधारी, अरप्यु तन मन धन पर उपकारमा ॥१॥
 पुत्र पाच पण धर्मना धोरी, स्वभायत गहेर दीपारी,
 साहस करी जीन धर्म सोभाव्यो, अमर नाम धरावीरे वीर २
 अमर पुत्र जे छगनभाइ ते, पर हित नीत करनारा,
 विघ द्विध भारथी सघनी भक्ति, वीर आज्ञा धरनारारे. वीर. ३
 ते शुभ शेटना शुवननी अदर, पुत्री रत्न समान,
 विनय विवेकने निर्मल बुद्धी, हीरा अमून्य नामरे. वीर ४

रामभात वदरना सुप्रसिद्ध शेट अमरचद प्रेमचदना सुपुत्र
 शेट छगलशीभाई अमरचदनी महिम सुपुत्री व्हन हीरा



जन्म मघत १९६९

वार्तिक वद ६

अवसान मघत १९७०

धावण वद १४

चाळपणे फेळवणी लहने, तप जप धर्मने घरती
 युद्धी प्रवळ फरी धर्म फरणीमा, सहुनी नजरे पटतीरे. वीर ५
 सवत अगनोतेर फातिक वद छठे, जम फर्मवश ली गो,
 दयाश्रवण वय श्रावण वच चौटशे, मुफाम स्वर्गमा किधोरे. वीर ६
 वय अगीपार वरसनी थातां, विरेक विद्या पुर,
 धर्म फीरणसम भाव प्रगट थया, तप करवा आतुरे. वीर ॥७॥
 सौभाग्यश्रीजीनी वाणि सृणतां, उलटथी भाव उमग
 सवत एशी श्रावण वद चोथे, अक्षयनिधि तप आरंभरे. वीर ८
 मातापिता मनमा विरार, पुन्य उदय मन मानी,
 धर्म प्रवीण पुत्री गुणपेरी, कृतार्थ जमने जाणीरे वीर ॥९॥
 साध्वीजी सौभाग्यश्रीजी, ज्ञानतणा भटार,
 हुफम फर्षे हिरा गुण नीरग्नि, वद वार हजाररे वीर. १०
 सवत ओगणिशो एशि वर्षे, सुद अष्टमि आसोमाम,
 गुरु कृपा अने देव दया फरीने, रचनार सगना दासरे वीर.
 देव गुफ्थी सघनी भक्ति, जे छे मुज आधार
 धीमनलाठ वीशनगर राशी, अरिहत गुण गानाररे वीर १२
 घेर घेर फया रत्न सम थानो, आशीश मुज अतरनी
 हिरासम चेतन सहु फरजो, पापगो भय जळ तरणीरे वीर १३

अनुक्रमणीका.

विषय	पृष्ठ
१ प्रस्तावना	
२ छद्	
३ पर्युषण पर्वना चैय वदनो	१
४ अक्षयनिधि तपनो विधि	९
५ बीजी विधि	११
६ अक्षयनिधि तपनु स्तयन	२१
७ अक्षयनिधि तपनु आराधन करनार मुन्सीनी कथा.	२९
८ बीशम्भानरु तप विधि	४१
९ ज्ञान पचमी तप विधि	४४
१० दीवालीना गरणानी विधि	२५
११ श्रीसिद्धचर नवपद ओज्जिनी विधि	४७
१२ नवपदना चैत्यवदनो	४९
१३ महागौर स्वामिना चैत्यवदनो १-२	४९
१४ पर्युषणनि सस्कृत स्तुति	५०
१५ नेमिनायनि स्तुति	५१
१६ ज्ञानपचमिनि स्तुति	५२

१७ दिवालिनु स्तवन.	५६
१८ पञ्चसणनि सजाय.	५५
१९ नवकार गालिनि ,,	५६
२० अययति बुमारना १३ ढालिया	५७
२१ नेमीनाथनो चोफ	७६
२२ गहुलीओ ४ तेमा हेन हीराना सयधी २ - तथा श्रीजी कल्पमृगनी अने चोथी पञ्च सणपर्वनी	७९-८३
२३ मिथ्यात्व पर्वनी गहुलीओ ३	८३-८६
२४ ममृजीने पाखणा बखते-कहवानी ढाल तथा पौखणु श्रीजु श्रीजु.	८६-८७
२५ राजुलनो विजणो -	८८

समाप्त

प्रातः स्मरण

मगल भगवान् वीरो, मगल गौतमः प्रभु ॥ मगल स्थु-
लभद्राद्या, जनधर्मोऽस्तु मगल ॥१॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वा-
भिष्टार्थेदायिने ॥ सर्वलब्धि निधानाय, गौतमस्वामीने नमः ॥२॥
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो भडार ॥ जो गुरु गौतम सम-
रिये, मनवच्छित दातार ॥३॥ गामतणे पत्साराडे, गुरुगौतम
समरत्त ॥ इछाभोजन घर कुशळ, लच्छीलिल करत ॥ ४ ॥
पुढरीक गौतमप्रमुह, गणघर गुणसपन्न ॥ मह उठी नित प्रग
मिये, चउट्टहसह धारन ॥५॥ मुरगोतरमणी सपने, जेहने लीधे
नाम ॥ एहिज अक्षर समरता, सीजे वछित काम ॥६॥

अथ श्री गौतमगुहनी चिनती

(चोपाई)

जयो जयो गौतम गणधार, महोटी लब्धितणो भडार
सभरे वाछीत मुखदातार जयो जयो गौतम मणधार १ वीर
वजीर बडो अणगार, चौदहजार मुनि शिरदार जपता नाम
होय जयकार, जयो जयो० २ गयगमणी रमणी जगि सार,
पुत्र कलत्र सज्जन परिवार, आने कनक कोडि विस्तार, जयो
जयो, ३ घरे घोडा पायक नहि पार, सुखासन पालखी उ
दार, वैरी विकट थाय विसराल, जयो जयो० ४ मह उठी
जपिये गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमला दातार, रुप रेख मयण
अवतार, जयो जयो० ५ कवि रुपचट गणि कगे शिष्य, गौ-
तम गुरु मणमे निश दोश, कहे चट ए सुमतागार, जयो जयो
गौतम गणधार ६

॥ श्री ज्ञानेश्वराय नम ॥

श्री पर्युपण पर्वनां चैत्यवन्दना.

चैत्यवदन १ लुं

श्री शत्रुघ्नय शणगाङ्ग हार, श्री आदि जिणद,
 नाभी राजा कुल चन्द्रर्षी, महर्षेवा नद ॥ १ ॥
 काश्यपगोत्र इक्ष्वाकुवश, विनीतानो राय,
 धनुषपाचसे देहमान, सोचनसम काय ॥ २ ॥
 वृषभ लाछन घुरवटीये सघसकल शुभरीत,
 अद्वाइधर आराधीये, आगम वाणी विनीत ॥ ३ ॥

चैत्यवदन २ जु

प्रणम्य श्री देवाधिदेव, जीनवर श्री महावीर,
 सुरनर सेने शत दात, प्रभु साहस धीर ॥ १ ॥
 पर्व पर्युपण पुण्यथी, पामी भवी प्राणी
 जन धर्म आराधीये, समकीत हित जाणी. ॥ २ ॥
 श्री जिन प्रतिमा पूजीयेये, कीजे जन्म पवित्र,
 जीव जतन करी साभलो, प्रवचन वाणी विनीत ॥ ३ ॥

चैत्यवंदन ३ जु

कल्पतरु सम कल्पसूत्र, पूरे मन वाञ्छित,
 कल्पसूत्र घुरयी सूनौ, श्री महावीर चरित्र ॥ १ ॥
 क्षत्रि कुड ग्राम्य नयर, सिद्धारथराय,
 राणी निशलातणी कुखे, कचन समरूप ॥ २ ॥
 पुण्फोत्तर स्वरयी चव्यापें, उपन्या पुण्य पवित्र
 चतुरा चौद सुपन लहे, उरजे विनय विनीत. ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ४ थु

सुपन वधिये सूत होस्पे, त्रिभुवन शणगार,
 न दिनयी रिद्धे वध्या, धन अखुट भंडार. ॥ १ ॥
 साढासात दिवस अधिर, जम्प्या नव मासे,
 सुरपति करे मेरु शिग्वरे, ओन्छव वल्लासे ॥ २ ॥
 कुडुमहाथा दिजोयेये, तोरण झाक क्षमाल,
 हर्षे वीर हुलरावीये, वाणी विनीत रसाल - ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ५ सु

जीननी न्हेन सुदर्शना, भाई नदिवर्द्धन
 राणी यशोदा पद्मणि, वीर सुकोमल रत्न ॥ १ ॥

देई दान सबत्सरी, लेई दीक्षा स्वामी,
 कर्म खपावी हुआ कवली, पचमीगति पामी. ॥ २ ॥
 त्रियाली दिवस दिनेअ, सब सकल शुभरीत,
 अष्टमकरी तैला परे, मुणजो एरुजचित्त. ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ६ हुं

पार्थ जिनेश्वर नेमनाथ, समुद्र मुविस्तार
 सुणीये आदिश्वर चरित्र, श्री जीनना अनर ॥ १ ॥
 गौतमादिक स्थिरावली, श्रद्ध समाचारी
 पर्वराय चोये दीने, भारया गणपारी. ॥ २ ॥
 ज्ञान दर्शन चारित्रतपए, जिनधर्म दृढचित्त,
 जिनप्रतिमा जीन सारीखी, बन्दु सदा विनीत ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ७ मु

पर्वराज सबत्सरी, दिनदिन प्रत्ये सेवो,
 श्लोक बारसे कलयमूत्र, मुनि मुखे सुणेयो. ॥ १ ॥
 पाटपरपर वार बोल, भारुपा गुरु हीरे,
 सामत श्री विजयमानमूरि, गच्छा धिप धीरे. ॥ २ ॥
 जीनशासन शोभा करुये, प्रीतिविजय गुरु शिष्य,
 विनीतविजय फदे वीरने, चरणे नामु शिश ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ८ मु

बडा कल्प पूर्वे दीने, घरे कल्पने लायो,
 राती जगा मसुखे करी, शासन सोहावो ॥ १ ॥
 ह्यगयरथ शणगारीने, कुमरलावो गुरु पासे,
 उडा कल्प दीन साभळो, गीर चरित्र उड्यासे ॥ २ ॥
 छट द्वादश तप कीजायेअ, घरिये शुभ परिणाम,
 स्वाभि वच्छळ प्रभावना, पूजा अभिराम ॥ ३ ॥
 जीन उत्तम गौतम प्रत्ये अ, कहेजो एकवीशवार,
 गुरुमुख पद्मथी मृणिये, तो पामे भयपार. ॥ ४ ॥

चैत्यवदन ९ मु

नव चौमासि तप कर्या, उण मामीदोय,
 दोय अतीमासी कर्या, तीम दोढ मासीदोय ॥ १ ॥
 बहोतेर पास क्षमण कर्या, मास क्षमण कर्या वार,
 खट बे मासि तप आदर्यो, वार अष्टम तप सार ॥ २ ॥
 खट मासि एक तेम कर्यो, पणदिन उण खटमास,
 वसें ओगणतीस छट भला, दीक्षा दिन एक खास ॥ ३ ॥
 भद्र प्रतिमादोयतीम, पारण दिन जास,
 द्रव्याहार पानक कर्यो, उणसे ओगण पचास ॥ ४ ॥

छद्मस्य एणोपरे रक्षा, सद्मा परिमह धोर,
 शुरु ध्यान अनलेकरी, गाल्या कर्म कठोर ॥ ५ ॥
 शुरु ध्यान अतर रक्षा ये, पाम्या केवल नाण,
 पद्मविजय कहे प्रणमता, लहीये नित्य कल्याण ॥ ६ ॥

श्री पर्युपण चैत्यवन्दन १० मु

पर्व पर्युपण गुणनीलो, नव कल्प विहार
 चार मासान्तर थीर रहे, एहीज अर्थ उदार. ॥ १ ॥
 आगाढ मुट चउदश थकी, सवत्सरी पचास
 मुनिवर दिन सिचेरमे, पढिकमता चउमाम ॥ २ ॥
 श्रावक पण ममता धरी, करे गुरुना बहुमान,
 कल्पमूत्र मुविहिन मुत्ते, सांभले एरुतान ॥ ३ ॥
 जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरु भक्ति रिशाल,
 माये अष्ट भवातरे, वरीये निरमाल. ॥ ४ ॥
 दर्पणथी निजरूपनो, जुवे मुदृष्टि रुप
 दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
 आत्म स्वरुप विलोकता ए, प्रगथ्यो मित्र स्वभाव,
 राय उतायी खामणा, पर्व पर्युपण टार ॥ ६ ॥
 नव रखाण पूजी मूणो, शुरु चतुर्थी सीमा
 पचमी दीन वांजे मूणे, होय विरोधी नीमा. ॥ ७ ॥

ए नहीं पर्वे पचभी, सर्व समाणी चोये,
भयभीर मुनि मानसे, भाग्यु अरिहानाथे ॥ ८ ॥

श्रुत ऋवली वयणा मुणीए, लही मानव अतार,
श्री शुभ वीरने शासने, पाभ्या जयजयकार ॥ ९ ॥

इति पर्युपण पर्व चैत्यवन्दन सपूर्ण ॥

अथ ऋपभजिन चैत्यवन्दन ११ मु

जय जय नाभि नरिन्दनल, सिद्धाचल मडन,
जय जय प्रथम जिणद कद, भद्रु ख विहडण ॥ १ ॥

जय जय साधु सुरीन्द वृद, वदिय परमेश्वर,
जय जय जगदानन्द कद, श्री ऋपभ जिनेश्वर ॥ २ ॥

जय जय श्री जिनवर्मेनो ये, दायक जगमा जाण,
तुज पदपकज नित्य नमु, निशदिन नमन कल्याण ॥ ३ ॥

अथ शातिनाथ चैत्यवन्दन १२ मु

जय जय शाति जिणद देव, हृथिणा पुरस्वामी,
विश्वमेन कुठ चद सम, प्रभु अतरजामी ॥ १ ॥

अचिराउरसरहस जिम, जिनवर जयकारी,
पारी रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥

सोळमा जिनवर प्रणमीये, नित्य उठी नामी शिश,
सुरनर भूप प्रसन्न मन, नमता चात्रे जगीश ॥ ३ ॥

श्री पार्श्वजिन चैत्यवन्दन १३ सु

पुरिसादाणी पार्श्वनाथ, नमीये मनरग,
 नीलवरण अश्वसेननद, निर्मल नि सग ॥ १ ॥
 कामितदायक कल्प शाख, वामा सुत सार
 श्री गरुडीपुर त्राम नाम, जपीये निरगार ॥ २ ॥
 त्रिभुवनपति त्रेपिसमोये, जाम अखडित आण;
 एक मने आराधनां, लहीये कोड कल्याण ॥ ३ ॥

अथ श्री नेमिजिन चैत्यवन्दन १४ सु

समुद्र विजय कुलचद नद, शिवादेवी जाया,
 यादव वज्र नभो मणि, सौरीपुर ठाया ॥ १ ॥
 वालथकी ब्रह्मचर्य घर, गतमार प्रचार;
 भोक्ता निज आमिक गुण, त्यागी ससार ॥ २ ॥
 नि कारण जग जीवनीये, आशानो विश्राम,
 दीन दयाल शिरोमणि, पूरण सुरतरु काम ॥ ३ ॥
 पशुना पोकार शृणि करी, छाडी गृहवास,
 तत्क्षण समय आठरी, करी कर्मनो नाश ॥ ४ ॥
 केवल श्री पामी करी ए, पहोच्या मुक्ति मोजार
 जन्ममरण भय टाल्या, ज्ञान सदा सुखकार ॥ ५ ॥

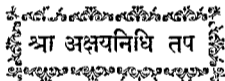
श्री वर्द्धमान जिन चैत्यवन्दन १५ सुं

वर्द्धमान जिनवर घणी, मणमु नित्य मेर,
 सिद्धारथ कुल चंद्रलो, मुर निमित्त मेव ॥ १ ॥
 त्रिशलाउपरसरहससम, मगत्र्यो मुर फद
 नेसरी लछन रिमल तनु, फचनमय वृन्द. ॥ २ ॥
 महावीर जगमा बढोय, पाचापुरी निराण,
 मुर नर भूप नमे सदा, पामे भ्रविचल ठाण. ॥ ३ ॥

अथ सर्व जिन चैत्यवन्दन १६ सुं

श्री मपर ममुरय नमु, विहरमान जिन विश
 रूपभाटिक बली बन्धिये, सपइ जिन घोरीस ॥ १ ॥
 सिद्धाचल गिरनार आतु अष्टासद बली सार,
 समेत निम्बर ए पांर तीर्थ, पयम गति दातार ॥ २ ॥
 ऊर्ध्व लोक जिनवर नमु, ते चोगासी लाख,
 महम सत्ताणु उपरे, प्रेरिस जिनवर भाख ॥ ३ ॥
 एकसो बावन क्रोडबली, लाख चोराणु सार
 सहस चौत्रालीस सानसे, साठ जिन पढिमाउत्तर ॥ ४ ॥
 अधो लोक जिन भवन नमु, सानक्रोड बढोतेर लाख,
 तेरमें क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख चित्त राख्या ॥ ५ ॥

व्यतर ज्योतिषीमा वलीये, जिन भुवन अपार
 ते भयि नित्यवत्न करो, जीमपामो भवपार. ॥ ६ ॥
 तीर्ठा लोके शाश्वता, श्री जिन भुवन विशाल,
 बरीसँने ओगणसाठ, वदु थइ उजमाल ॥ ७ ॥
 लाख ऋण्य एकाणु सहस, ऋणसँ विश मनोहारः
 जिन पडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य कर जुहार ॥८॥
 ऋण्य भुवन माह वलीए, नामादिक जिनसा
 सिद्ध अनता वदीये, महोदय पद दातार ॥ ९ ॥


 श्री अक्षयनिधि तप

घट सम्याप्य देवाग्रे गन्धपुष्पादिपूजितम् ।

तपो विधीयते पक्ष तदक्षयनिधि स्फुटम् ॥ १ ॥

आ तप अक्षयनिधि (अगूट भडार) नी जेवो होवायी
 तेनु नाम अक्षयनिधि तप ठे ते श्रावणवद बोधने दिवसे शरू
 करवो ते दिवसे जिनेश्वरनी प्रतिमा आगळ गायना जाणयी
 भूमि लीपीने ते पर घटुली करी तेना पर कुभ स्थापन करवो
 (ते कुभ सुवर्णनो रुपानो के अय उत्तम घातुनो अथवा

छेवट माटीनी लेवो) ते कुभ विचित्र प्रकारना गव पूजोधी
 पूजवो. तथा तेमा सुवर्ण, मणि, मुक्ताफळ, सोपारी विगरे
 नाखीने तेनु स्थापन करवु. पळी पदर टिवस सुयी तेनु नित्य
 पूजन करवु जिनेश्वरने त्रण प्रदक्षिणा करीने घटमा अक्षतनी
 अजळी दररोज नाखी (ते अजळीमा सोनानाणु, रूपा-
 नाणु, सोपारी विगरे लेवु) कुभ पासे नेवेय ढोकुतु दररोज
 एकासणु करतु हमेशा कुभ पासे नृत्य, गीतादिक उत्सव
 करतो ए रीते पर्युपणा पर्यंत आ तप करवो (सप्तसरीने
 दिवसे एटले उेडे दिवसे उपवास करवो) आ रीते चार
 वर्ष पर्यंत आ तप करवो उत्रापनमा मोटी स्नात्र विधि पूर्वक
 नाना प्रकारना पद्वात्र, फळ विगरे ढोकुता सववात्सल्य
 सवपूजा करती आ तप करवाधी सर्व प्रकारनी सपत्ति प्राप्त
 थाय छे

तीजी रीते अक्षतनी मुठी हमेशा कुभमा नाखी जेटला
 दिवसे ते घट पूर्ण थाय तेटला दिवस प्रतिदिन एकासगादिक
 तप करवो तीजी सर्व विधि तथा उत्रापन उपर प्रमाणे
 जाणतु आ श्रावकने करवानो आगाढ तप छे गरणु
 “ नमो नाणस्स ” ए पढनु नयकारवाळी तीश प्रमाण
 गणतु साथीया विगरे ५१ एकावन करवा-

२ श्री अक्षयनिधि तप विधि (बीजो)

आ तप श्रावण व ४ ने दिवसे ग्रह करी सोळ दिवसे पूरा करयो तेमा सुवर्णनो स्तनजडित कुंभ करावयो अथवा शक्ति प्रमाणे बीजो काइ र्पा विगेर धातुनो करावयो अथवा उग्र शक्ति न होय तो माटीनो करावयो पछो ते कुंभ घरमा, देरासरमां अथवा उपाश्रये पवित्र स्थाने ढागरनी ढगली करी त उपर परावयो (वनता सुधी कुंभ पासे अखड दीरो फानममा यत्नापूर्वक १६ दिवस सुधी राखवो) तेनी समीपे स्वस्ति करी त उपर श्री कल्पमूत्र पथराववु दररोज वे टक पडिकमणु करतु, दवरदन पडिलेण करता भूमि शयन करवुं, ब्रह्मचर्य पाळतु, एकाम्गणानो तर १५ दिवस पर्यंत 'करवो, छेले दिवसे पटले भाद्रपद शुद्धि ४ थे (सक्छरीए) उपवास करयो, आ प्रमाणे चार र्प पर्यंत करायी ६४ दिवसे आ तप पूर्ण थाय छे दररोज देवपूजा करवी पुस्तक उपर चदरवो वाचवो ज्ञानने धूप दीप करी हमेशा र्पानाणे पूजतु (क्यारे पूजतु ते विधिमा बतावेल छे) शक्ति न होय तो पहले छेले दिवसे र्पानाणे पूजतु, अने वचला दिवसोमा

१ कोइ प्रथमा विसणु पण थइ शये पम लख्यु छे

यथाशक्ति द्रव्य बडे पूजवु ' नमो नाणम्म ' ए एदनी २०
 नवकारवाजी दररोज गणनी. (कोइ जग्याए उँ हिँ श्री वल्लो
 नमो नाणस्स ॥ एम रुहेल छे.) २० लोगस्सनो काउसग्ग करवो
 नीचे वतावेली विधि मुजब दररोज विधि करवी, कुभनी उपर
 श्रीफळ मूकी लोला के पीळा रेशमी रत्नबडे बांधी राखवो
 दररोज तेनी अदर विधिने अते एकेरु पसली अक्षतनी
 नाखवी सोळ दिवसे कुभ भराइ जाय तेम करतु ठेन्ले दिवसे
 कुभनी समीपे रात्रि जागरण करवु पूजा प्रभावना करनी
 अक्षयनिधि तपनु म्त्वन दररोज गावु साभळतु. पारणाने
 दिवसे (भाद्रपद शुक्ति ५ मे) कुभने फुठनी माळा पहारावी
 सौभाग्यवती स्त्रीने माथे मूकरो सर्व जातिना पक्का सुखडी
 विगेरे यथाशक्ति करावी, तेना याळ पण सौभाग्यवती स्त्रीओने
 माथे मूकना. हाथी घोडा बाजीओ विगेरेथी मोटी धामधुम
 साथे बरगौडो चढावी कुभ लडने दरासर आरतु कुभवाळी
 स्त्रीओए त्रण प्रदक्षिणा करी मधु पासे हुम मुकवो नैबैधना
 याळ पण मधु पासे धरवा ज्ञानना पुस्तकने गुरुमहाराज पास
 ँइ जइ त्या पधरारी गुरुपूजा तथा ज्ञानपूजा रूपानाणार्थी
 करनी (गुरुपूजानु द्रव्य गुरु समिप धरवु) त दिवसे यथा-
 शक्ति स्वामीवात्सल्य, प्रभावना विगेर करतु जेटला स्त्री के

पुरुष आ तप करता होय ते दरैकने माटे कुंभ जूदा जूदा पधराववा. कलसून एकज पधराववु. आ तप श्रावकने करवानो ठे. आ भव परभवमा महान् लाभ आपनार आ तप छे

दररोज करवानी विधि नीचे प्रमाणे

३ श्री अक्षयनिधि तपनी विधि

प्रथम ईर्ष्याविही प्रतिक्रमवा, पछी डच्छाकारेण० अक्षयनिधि तप आराधन निमित्ते चैत्यवदन करु ? ईच्छ कही नीचे प्रमाणे चैत्यवदन करवु

शासन नायरु मुखकरण. र्थमान जिनभाण । अहनिश णहनी शिर बहु, आणा गुणमणिखाण ॥ १ ॥ ते जिनवरथी पामीया, तीपदो श्री गणधार । आगम रचना बहु विध, अर्थ विचार अपार ॥२॥ ते श्री श्रुतमा भापियाए, तप बहु विध मुखकार । श्री जिन आगम पामीने, साथे मुनि शिव सार ॥ ३ ॥ सिद्धातयाणी मुणवा रसिक, श्रावक समकित धार । उष्ट सिद्धि अर्थ कर, अक्षय निधि तप सार ॥ ४ ॥ तप तो सूत्रमा अति घणा, साथे मुनिवर जेह । अक्षय निधानने कारणे, श्रावकने गुण गेह ॥ ५ ॥ ते माटे, भरी तप करोए, सर्व

ऋद्धि मळे सार । विधिथु एह आराधता, पामोजे भवपार॥६॥
 श्री जिनवर पूजा करो, त्रिकु शृद्धे त्रिफाल । तेम बळी श्रुत-
 ज्ञाननी, भक्ति यइ उजमाळ ॥७॥ पढिकुमणा वेदकना, ब्रह्म
 चर्येने घरीए । ज्ञानोनी सेवा करी, सहेजे भरजळ तरीए
 ॥८॥ चैत्यवदन शुभ भावधीए, स्तवन थोऽ नमस्कार । श्रुत
 देवी उपासना, वीरविजय हितकार ॥ ९ ॥ पछी जर्कविधि
 कहोनेनमुध्पुण फह्यु, पछी वे जायति कही नमोऽहेतू कही
 नाचे प्रमाणे स्तवन कहतु

(लावो लावोने राज मोद्या मूला मोती-ए देशी)

तपवर कीजे रे, अज्ञय निधि अभिधाने सुप्रभर
 लीजेरे, दिन त्तिन चढते वाने (ए आरुणी) पर्व पजूसण
 पर्व शिरोमणि, जे श्री पर्व कहाय । मास पास छठ टसम
 दुवालस, तप पण ए दिन थाय ॥१॥ तपवर० पण अक्ष-
 यनिधि पर्व पजूसण, केरो कहे जिन भाण । श्रावण वट
 चोथे प्रारभी, सवळरी परिमाण ॥ २ ॥ तपवर० ए तप
 करता सर्व ऋद्धि वरे, पग पग प्रगटे निगान । अनुक्रमे पामे
 तेह परम पद, सावयी नाम प्रगान ॥ ३ ॥ तपवर० परम-
 त्सरथी कर्म बधाणु, तेणे पामी दु खजाळ । ए तप करता ते
 १ ३, कर्म थयु विसराळ ॥४॥ तपवर० ज्ञान पूजा श्रुत

देवी काउसग, स्वस्तिक अति सोहावे । सांजन कुभ जडित नि-
 जगक्ति, सपूरण क्रमे थावे ॥ ५ ॥ तपवर० जत्रय मध्यम
 उत्कृष्टी करीए, इग दौय तिन वरीस । वरस चोथे श्रुत देवी
 निमित्त, ए तप वीशवावीश ॥ ६ ॥ तपवर० एणे अनुसार
 ज्ञानतणु रर, गरणु गणीए उदार । आवश्यकदि करणी
 सयुत, करता लह भयपार ॥७॥ तपवर० इह भय परभव दोष
 आशसा, रहित करो भयि प्राणी । जे पर पुद्गळ ग्रहण न
 करयु, ते तप कह वरनाणी ॥ ८ ॥ तपवर० रातिजगा पूजा
 परभावना, हय गय रथ शणगारीजे । पारणा दिन पच शब्दे
 वाजे, राजते पधरावीजे ॥ ९ ॥ तपवर० चैत्य
 विशाळ होय तिहा आरी, प्रदक्षिणा वनी दीजे । कुभ
 विविध नैवेद्य मयाते, प्रभु आगळ ढोडजे ॥ १० ॥ तपवर०
 रायनपुरे ए तप मुणी बहु जण, थया उजमाळ तप वाजे ।
 एह मुख्य मटाण ओछवमा, मसालीया देवराज ॥ ११ ॥
 तपवर० सवत अठार तेंताली वरसे, ए तप बहु भक्ती कीधो ।
 श्री जिन उत्तम पाद पसाये, पद्मविजय फळ लीधो ॥१२॥
 तपवर०

त्यार पछी जयत्री वराय० कही “सुयदेवयाए करेमि काउ-
 स्सग” अन्नध्य० कही एक नवकारनो काउस्सग करी

नमोऽर्हत् कही “ सुयदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्मस-
घाय । तेसिं खरेउ सयय, जेसिं सुयसायरे भत्ति ॥ १ ॥ ”
ए थोई कहेवी पछी पच्चख्खाण करयु पछी पूजानी ढाल
कहवी ते नीचे प्रमाणे—

दुहा

सप्तम पद श्री ज्ञाननो, सिद्धचक्र पन्माही । आराधीने
शुभ मने, दिन दिन अधिक उठाहिं ॥ १ ॥ अन्नाणसमोह-
तमोहरस्स, नमो नमा नाणदिवायरस्स । पचप्पयासु उवगा
रगस्स, सन्नाण तव्वत्थपयासगस्स ॥ १ ॥ हुवे जेहथी सर्व
अज्ञान रोधो, जिनाधीश्वर प्रोक्त अर्थावबोधो । मति आदि
पच प्रकार प्रसिद्धो, जगद्भासते सर्वदैराविक्रद्धो ॥ २ ॥
यदीय प्रभाते सुभक्ष अभक्ष, सुपेय अपेय सुकृत्य अकृत्य । जेणे
जाणीए लोक मये मुनाण, सदा मे विशुद्ध तदेव
प्रमाण ॥ ३ ॥

ढाल

भय नमो गुणज्ञानने, स्वपर प्रशाशक भावे जी । पर-
जाय धर्म अनतता, मे-निद स्वभावेजी ॥ १ ॥ (चाल)
जे सुरय परिणति सफल ज्ञायर, बोध भाव विरुच्छना ।

मति आत्ति पच प्रकार निर्मळ, सिद्ध साधन लच्छना ॥ स्या-
द्दादसगी तत्परगी, प्रथम भेदाभेदता । सविकल्पने अविकल्प
वस्तु, सकल सशय उदता ॥ ७ ॥

ढाल बीजी

भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य
अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते सकल आधाररे ॥ भ-
विका, सिद्धचक्र पद वदो ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञानने पत्ती अहिंसा,
श्री सिद्धाते भाळ्यु । ज्ञानने वदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीए
शिवमुख चार्य्युरे ॥ भ० ॥ २ ॥ सकल क्रियानु मूल जे श्रद्धा,
तेहनुं मूल जे कहीये । तेह ज्ञान नित्य नित्य वदीजे, ते विण
रुहो कैप रहियेरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पच ज्ञानमांदि जेह सदा-
गम, स्वपर प्रकाशक जेह । दीपरु परे श्रीभुवन उपगारी,
उळी जेम रवि शशी मेहरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ लोक ऊर्ध्व
अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध । लोकालोक
प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञाने मुज शुद्धरे भ० ॥ ५ ॥

ढाल त्रीजी

ज्ञाना वरणी जे कर्म ठे, सय उपशम तस याप रे
तो हुए एहिज आत्मा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥

जिनेश्वर उपदेशे ॥१॥ पछी " ऊँ ह्रीं परमात्मने नमः ज्ञान-
पदैभ्यः कलशं यजामहे स्वाहा ॥

ए मत्र बोलीने ज्ञाननी फरती कलशयी धारावादी देवी
पछी वासलेप-रुमानाणु के पैसो हायमा लइने नीचे
प्रमाणे घोय कहेवी, जोन जोजन भूमि, वाणिनो विस्तर ॥
प्रभु अर्थप्रकाशे, रचना गणधर सार ॥ सोय आगम मुणतां ॥
छेदी जे गति चार ॥ प्रभु वचन रखाणी, लइए भवनो पार ॥ १ ॥
वासलेपवडे पूजा करवी अने पछी द्रव्यपूजा करवी सोना
महोर तथा रुपामहोरयी ज्ञानो यथाशक्ति पूजा करवी,
पछी नीचे प्रमाणे दुहा बोली श्रुतज्ञानना ०० भेदना
२० स्वमासमण देवा

पीठीकाना दुहा

मुखरु शतेश्वर नमी, शुणश्यु श्री श्रुतनाण । चउ
मुगा श्रुत एक छे, स्वपर प्रकाशक भाण ॥ १ ॥ अभिलाष्य
अननर्मे, भागे रचियो जेह । गणधर देवे प्रणमीओ, आगम
रयण अछेह ॥ २ ॥ इम उहुली वक्तव्यता, छ ठाण वढीया
भाव । क्षमाश्रमण^१ भाष्ये^२ कथा, गोपय सर्पिं जमाव ॥ ३ ॥
लेशयमी श्रुत वरणबु, मेद भला तस वीश । अक्षयनिधि

१ जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे २ विशेष'घटवक' भाष्यमा

तपने दिने, क्षमाश्रमण ते वीश ॥ ४ ॥ सूत्र अनत अर्थ
 मई, अक्षर अश ल्हाय । श्रुत केवळी केरळी परे, भारे श्रुत
 परजाय ॥ ५ ॥ (प्रथम मेट) श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमो,
 भाय मगलने काज । पूजन अर्चन द्रव्ययी, पामो अविच-
 राज ॥ ६ ॥ (ग्यमासमण द्यु)

(आ छट्टो दुहो दरेक खमासमणे रुहेवो)

इग सय अढवीस स्वरतणा, तिहा अकार अठार ।
 श्रुत पर्याय समासमें, अश असख्य विचार ॥७॥श्री॥श्रु०॥१॥
 वत्रीश वर्ण समाय ठे, एक मिलोक^३ मझार । ते माह ए-
 अशर ग्रह, ते अक्षर श्रुत सार ॥ ८ ॥श्री श्रु०॥ ३ ॥ क्षयो-
 पशम भावे करी, बहु अक्षरनो जेह । जाणे ठाणाग आगले,
 ते श्रुत निधि गुणगेह ॥ ९ ॥ कोटि एकावन अडलसा, अ-
 ढसय एकाशी हजार । चालीश अक्षर पदतणा, वहे अनु-
 योग दुवार ॥ १० ॥ श्री श्रु० ॥४॥ अर्थात् इहा पण क्यु,
 जिहा अधिकार ठराय । ते पद श्रुतने प्रणमता, ज्ञानावरणी
 हठाय ॥११॥ श्री श्रु० ॥५॥ अठार हजार पदे करी, अग
 प्रथम सुविलास । दुगुणा श्रुत गहु पद ग्रहे, ते पद श्रुत स-
 मास ॥ १२ ॥ श्री श्रु० ॥६॥ पिढमकृतिमा एक पदे, जाणे

बहु अयदात । क्षयोपशमनी विचित्रता, तेहज श्रुत सघात
 ॥ १३ ॥ श्री श्रु० ॥ ७ ॥ पचोतेर भेदे करी, स्थितिघादि
 विन्नासारुम्मपयडी पयडी ग्रह, श्रुत सघात समास ॥ १४ ॥ श्री
 श्रु० ॥ ८ ॥ गत्यादिक जे मार्गणा, जाणे तेहमा एक । विवरण
 गुणवाणान्किक, तस प्रतिपत्ति विनेरु ॥ १५ ॥ श्री श्रु० ॥ ९ ॥
 जे वासट्टि मार्गणपदे, लेदया आदे निवास । समग्र तरतम
 योगथी, ते प्रतिपत्ति समास ॥ १६ ॥ श्री श्रु० ॥ १० ॥
 सतपदादिक द्वारमा, जे जाणे शिव लोकाएकदोयद्वारे करी,
 श्रद्धा श्रुत अनुयोग ॥ १७ ॥ श्री श्रु० ॥ ११ ॥ वली सतादिक
 नव पद, तिहा मार्गणा भाम । सिद्धतणी स्तवना करे, श्रुत
 अनुयोग समास ॥ १८ ॥ श्री श्रु० ॥ १२ ॥ माभृत माभृत
 श्रुत नमु, पूरवना अधिकार । बुद्धि मरल प्रभायथी, जाणे
 एक अधिकार ॥ १९ ॥ श्री श्रु० ॥ १३ ॥ माभृत माभृत श्रुत
 समा, माभिध लडि विशेष । बहु अधिकार इत्या ग्रहे,
 क्षीगत्रर उपदेश ॥ २० ॥ श्री श्रु० ॥ १४ ॥ पूरव गत वस्तु
 जिक, माभृत श्रुत ते नाम । एक माभृत जाणे मुनि, तास
 करु परिणाम ॥ २१ ॥ श्री श्रु० ॥ १५ ॥ पूरव लडि प्रभा-
 यथी, माभृत श्रुत समास । अधिकार उहूला ग्रहे, पद अनु-
 सार विलाम ॥ २२ ॥ श्री श्रु० ॥ १६ ॥ आचारादिक

नामधी, वस्तु नाम श्रुत सार । अर्थ अनेक विषे ग्रहे, ते पिण
 एक अधिकार ॥ २३ ॥ श्री श्रु० ॥१७॥ दुगमय पणयीस
 वस्तु छे, चौद पूरवनी सार । जाणे तेहने उदना, एक चामे
 सो वार ॥२४॥ श्री श्रु० ॥१८॥ उत्पादादि पूरव जे, सूत्र,
 अर्थ एक मार । विद्या मत्रतणो कथो, पूरव श्रुत भडार
 ॥ २५ श्री श्रु० ॥ १९ ॥ विंदुसार लगे भणे, तदिज पूरव
 समाम । श्री शुभ गीरने, शासने, होजो ज्ञान प्रकाश ॥ २६ ॥
 श्री श्रु० । २० ।

(प्रथमना ४ पीठीमाना दुहा ६ हो दरेक भेदे कहे-
 वानो दुहो अने ९ मो दुहो तेदला स्वमासमणमा न गणवा)

पछी पसली (खोरो) भरी रोधागाय सुपटपन्वी०
 ए स्तुति बोलीने अथवा “ ज्ञान समो को धन नही, सपता
 समो नहि मरु जीवित सम आशा नहीं, लोभ समो नहीं
 दुख ’ आ दुहो बोलीने ते पसली कुभमा नाखवी इति
 विधि सपूर्ण

४ ॥ अथ श्री अश्रयनिधि तपनुंस्तवन ॥

॥ दुहा ॥

श्री शरेश्वर शिर नमी, कहु तप फल सुविचार ॥

क्षयनिधि तप भाखीयो, प्रवचनसारउद्धार ॥ १ ॥ तप तपता
 अरिहा प्रभु, केवलनाणने हेत ॥ नाण लही तप तपो कीयो,
 शिवरमणी सकेत ॥ २ ॥ तिम सुदरी परे तप करो, अक्ष
 यनिधि गुणवान ॥ श्रुतकेवलीए जे रच्यो, कल्पभूत्र बहु
 मान ॥ ३ ॥

॥ढाळा॥ रुडीने रढीयालीरे वाला तारी वांसळीरे
 ॥ ए देशी ॥

जबु भरते रे नयरी राजग्रहीरे, सवर शेठ वसे एक सारा ॥
 गुणवती नारीरे कठण आजीविकार, घर दारिद्र्यतणो भं
 डार ॥ सुदरी सेवोरे, अक्षयनिधि तप भलोरे ॥ १ ॥ ए
 आरणी ॥ पुण्य सयोगेरे प्रिया गरभे फलीरे, तव तस वृत्ति
 चली घरघार ॥ कोड व्यवहारीरे वणज करायतारे, बाध्यो
 शेठतणो व्यवहार ॥ सुदरी० ॥ २ ॥ पूरण मासेरे जमी
 कुमारिकारे, प्रगटथो नाल निरुपेप निगान ॥ लक्षणवैतीरे पुत्री
 मभावथीरे, राय मुणी करतो बहु मान ॥ सुदरी० ॥ ३ ॥
 पुत्रनी पहरेरे जन्म उत्सव कर्योरे, स्वजनधर्म नोतरीया गेहा
 सवर शेठेरे थाप्यु सुदरीरे, नाम महोत्सव करी धरी नेह ॥
 ॥ सुदरी० ॥ ४ ॥ बाल स्वभावेरे रमती सुदरीरे, जिह
 जिहा भूमि खणती रमाय ॥ पूव पुयेरे मणि माणेऊ भयोरे

तिहा तिहां द्रव्य निधि प्रगटाय ॥ मुन्दी० ॥ ५ ॥ आणी
 आपरे तातने सुदरीरे, तिणे ते शेठ हुओ घनवत ॥ यौवन
 जागेरे रभा उर्वशीरे, देखी शेठ करे वर्चित ॥ सुदरी० ॥ ६ ॥
 शेठ समुद्रप्रियाभिघ नगरमारे, कमलसिरि नारी तस पुत्त ॥
 श्रीदत्त नामेरे रुप कला भयोरे, तस परणावी ते घन जुत्त ॥
 सुदरी० ॥ ७ ॥ पुण्यपनोनीरे सामर सुदरीरे, आरी तत्-
 क्षग निधि प्रगटाय ॥ पग अगुठेरे कांकरो कात्तारे, पूर्ण
 कल्य धन लेती जाय ॥ मुन्दी० ॥ ८ ॥ मोसालेभाणेजीने
 तेढ्या भोजनेरे, तेहने घर पण लक्ष्मी न माय ॥ इम जिहा
 थालारे सा पगला ठवेरे, निधि प्रगटे सह सुखिया थाय ॥
 सुदरी० ॥ ९ ॥ वहुने मानेरे ममरो भली परेर, राजा पण
 चित्त विस्मय याय ॥ एक दिन आव्या धर्मशोष म्ररिवगर,
 राजा प्रमुख ते बदन जाय ॥ सुदरी० ॥ १० ॥ सुदरी पूटे
 कहो कुण कारणेरे, पग पग पासु रुद्धि रसाल ॥ म्ररि कह
 साचोर पूर्व भव ते कयोरे, अक्षयनिधि तप थडे उजमाठ
 ॥ सुंदरी० ११ ॥

॥दाला॥२॥ माता जमोदा तमारो कान, मही वेचना
 मागे दाणा॥ए देशी ॥ अथवा चोपाईनी देशी ॥

॥ सेटकपुर संयम अभिधान, शेठ प्रिया

गुणवान् ॥ ऋजुमति तप राति रह, ज्ञान भक्ति सुग्य संपत्
 लहे ॥ १ ॥ रयणावली फनकावली करे, एका बली रि-
 धिए उचरे ॥ पाढोशी वसु शेठे ररी, सोम सुंदरी
 बहु मन्छर भरी ॥ २ ॥ पुण्यवती तप राती बहु,
 ऋजुमति प्रशसे सहु ॥ सोमसुदरी सुणी निंदा करे, टाकणी
 परे छल जोती करे ॥३॥ भुरयो ब्राह्मण बगायो डोर,
 चाप्यो नाग नासतो चोर ॥ राढ भाढ ने मातो साढ, ए
 सानेयो उगरीये मांड ॥ ४ ॥ लाग्यु घर शेठ सजमतणु,
 सामसुदरी चित्त हरएयु घणु ॥ नारी प्रभाये न बळी एक
 छडी, बळी एक दिन घर धाढज पढी ॥५॥ पाढोसण मन
 चित्ते इथु पापी शेठनु न गयु किथु ॥ दतो श्रापने निरघन
 गया, त दपती मुरलोफ गया ॥ ६ ॥ सोमसुदरी सुणी मन्छर
 भरी, अशुभ कर्म उपार्जन करी ॥ पापी परण सा कोइक
 गुणी, श्रावक मुख नरफारज सुणी ॥ ७ ॥ जितशत्रु मधु
 रानो राय, चउ मुत उपर बेटी धाय ॥ सर्वत्राद्धि नामज
 तस दइ, पच धावथु मोटी थइ ॥८ शत्रु सैन्य समूहे नडयो,
 जितशत्रु रणयोग पडयो ॥ उट पढी जब राजद्वार कुवरी
 पण नाठी तिणीवार ॥ ९ ॥ उजाति एक अटवी पढी, रवि
 उदये माग शिर चढी ॥ वनफल वृत्ते वनचर थइ, यौवन

वेला निष्फळ गइ ॥ १० ॥ एक विद्याघर देखी
 रुरी, परणी सा निज मंदिर वरी ॥ तिणि वेला
 घर लागी गयु, सर्व ऋद्धि पगळेथी ययु ॥ ११ ॥
 विद्याघरे फरी वनमा री, पल्लिपति एरु भीले हरी ॥ त्रीजे
 दीन घर तेनु उल्यु नारी निंदन सहु जन भल्यु ॥ १२ ॥
 सार्थवाह कर घेची तीजे, चाल्यो निज देशावर भणि ॥ पथ
 वन्चे लटाणा तेह, सर्व ऋद्धि नाठी लई देह ॥ १३ ॥ वनमा
 सरोवर तीरे खडी, राजकुमारी कर्म नडी ॥ पुन्हे मुनि मल्था
 गुण गेह, मोठे वयणे बोलावी तेह ॥ १४ ॥

॥ दाळ ॥ ३ ॥ छोरी जाटडीनी ॥ ए देशी ॥

॥ छोरीरे बेटी तु तो रायनी, हे काइ उभी सरोवर
 पाळरे ॥ शु दुःख चिंतरे ॥ सिग्दार सहने सुख करे, महा
 राज मुनि एम उचरे ॥ पूर्वभव मन्डर करी, हे काइ फडी
 तर शाखा ढालरे । सोभमुदरी भवे ॥ सिर० ॥ म० ॥ १ ॥
 तात परण पुर लुटीयु, हे काइ पटी तु अटवी मोजाररे ॥
 दु ख पामी घणु, खेचरशु, इजे भवे लग्नो॥ हे काइ सुख सभोग
 एक वाररे, वली वनचर पणु ॥ सि० ॥ म० ॥ २ ॥ झानी
 गुर वपणां सुणी, हे राजकुमारी पुछायरे ॥ गुरु चरणे नमी,
 आ दु ग्वथी किम छुटीये ॥ हे कहीये करी मृपसायरे, दु ख

वन्ना खमी ॥ सि० ॥ म० ॥ ३ ॥ अक्षयनिधि तप विधि
 करो, हे ज्ञान भक्ति विस्ताररे ॥ शक्ति न गोपनी, श्रावण
 वदी चोथे थकी ॥ ह सप्तसरी दिन साररे, परण तप तपी ॥
 सि० ॥ म० ॥ ४ ॥ चोथभक्त एकासणे, ह शक्ति तणे अनु-
 साररे ॥ घट अक्षत भरो, विधि गुरुगमथी आचरो ॥ हे गणशु
 तोय हजाररे, पडिक्मणा कगे ॥ सि० ॥ म० ॥ ५ ॥ एक
 वरस जघन्यथी, हे तीन वरस उकिट्टरे ॥ इण विधि तप करो,
 शासन देवी कारणे ॥ हे चोथे वरस विसिट्टरे, वळी ए आ
 दरो ॥ सि० ॥ म० ॥ ६ ॥ आ भव मनोवच्छित फले, ह परभव
 श्रद्धि न मायरे ॥ हरि चक्रिपरे, उम निसुणी कुमरी तिहा ॥
 हे वादी गुटना पायरे, गइ ग्रामातरे ॥ सि० ॥ म० ॥ ७ ॥
 परयग करता चारुरी, हे आजीयिका निर्वाहर ॥ मुख दु खमा
 करे, अल्पविधिये तप तिणे कर्यो ॥ हे प्रथम वरस फरि चाहरे,
 बीजे भलिपर ॥ सि० म० ॥ ८ ॥ चोथे वरस तप माडता,
 हे काइरु हुई धनतरे ॥ एक दिन आवीया, विद्याधर क्रीडा
 वशे ॥ ह पूरव नेह उलसनरे, देखी निज प्रिया ॥ सि० ॥
 ॥ म ॥ १० ॥ घापी लइ अनेउर, ह सा कहे शीलवत सुगयरे ॥
 इजि काया थरी, शेपायु अणसणे मरी ॥ हे सवर पुत्री
 तुजरे, कहु सुण सुदरी ॥ सि० ॥ म० ते ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कोश्या वेश्या कहे रागीजा, मनोहर मन
गमता ॥ ए देशी ॥

॥ निज पूर्वभव सुणी तेहजी, सुदरी सुकुमाली ॥ जाति-
स्मरण गरे तेहजी ॥ सु ॥ तप फणे लहो ऋद्धि रसालजी ॥
॥ सु ॥ रुह धर्मगोप अणगारजी ॥ सु ॥ १ ॥ कहे सुंदरी
सर्वे माचुजी ॥ सु० ॥ तुम ज्ञानमाहे नवी काचुजी ॥ सु० ॥
अवतिमाह बखाण्याजी ॥ सु ॥ तेहवा में तुमने जाण्याजी ॥
सु ॥ २ ॥ सूरि वदी निज घर आवेजी ॥ सु ॥ तप अश्वय-
निधि महावेजी ॥ सु ॥ राजा राणी तिणि वेलाजी ॥ सु ॥
शेठ सामन सर्व भेठाजी ॥ सु ॥ ३ ॥ पग पग प्रगटे जे निघा-
नजी ॥ सु ॥ कर प्रभायना बहुमानजी ॥ सु ॥ नाम सुदरी
तो प्रिसराणीजी ॥ सु ॥ ते तो अक्षयनिधि कहेवाणीजी ॥
॥ सु ॥ ४ ॥ मन मोटे पूर्ण फल लीधुजी ॥ सु ॥ पचमीए
पारणु कीधुजी ॥ सु ॥ ज्ञान भक्ति महोच्छव देखीजी ॥ सु ॥
देवी देव हुआ अनिमेपीजी ॥ सु ॥ ५ ॥ सुख विलसता
ससारजी ॥ सु ॥ हुआ सुत चड पुत्री चारजी ॥ सु० ॥
लियो अते सयम भारजी ॥ सु० ॥ घनघाति खपाव्यां
चारजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ लही ऋवल शिवपुर जावेजी ॥ सु० ॥
गुण असुरलघु निपजावेजी ॥ सु० ॥ अवगाहन

ताजी ॥ सु० तिहा बीजा सिद्ध अनताजी ॥ सु० ॥ ७ ॥
 तस फरसित देश प्रदेशीजी ॥ सु० ॥ असख्य गुणा सुविशे
 वेजी ॥ सु० ॥ जुओ प्रथम उपागे ठामजी ॥ सु० ॥ शुभवीर
 व्हे प्रमाणजी सु० ॥ ८ ॥

॥ढाल् ॥ ५ ॥ कोईलो पर्वत धुयलोर लोल ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिणेश्वर गुणनीलोरे लोल, ए भाख्यो अपि
 काररे ॥ सुगुणनर ॥ रते शासन जेहनुरे लोल, एरुपीस
 वरस ढजागरे ॥ सुगुणनर ॥ वीर जीणेश्वर गुणनीलोरे ॥ १ ॥
 जिहा सफठ जिनगुण धुणोर लोल, दिहा सफठ प्रभु ध्यानरे ॥
 ॥ सु० ॥ जन्म सफठ प्रभु दरिमणेर लोल ॥ राणीए सफल
 कानरे ॥ सु० ॥ वी ॥ २ ॥ तास परवर पाटवीरे लोल,
 श्रीविजयभिद सूरेश्वरे ॥ सु० ॥ सयविजय पुत्र तेहनारे
 लोल, कपुरविजय कवि शिष्यरे ॥ सु० ॥ वी ॥ ३ ॥ क्षमा
 विजय गुरु तेहनारे लोल, श्रीजसविजय पयासर ॥ सु० ॥
 श्रीशुभविजय सुगुणनमोरे लोल, सुरत रही चउपासरे ॥ सु० ॥
 ॥ वी० ॥ ४ ॥ चद्र मुनि वसु हिमकरु (१८७१) रे लोल,
 वरसे श्रावण मासरे ॥ सु० ॥ श्रीशुभवीरने शासनेरे लोल,
 होजो ज्ञानमहाशर ॥ सु० ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ कलश ॥ ए पच ढाल रसाल भक्ति पच ज्ञान आरा
 धरा ॥ काम प्रमाद किरिया पच छडी पचमी गति सायवा ॥

नम कृष्ण पचमी स्तवन रचीओ, अक्षय निधिक कारणे ॥
 शुभवीर ज्ञाने देवसुदरी नाचवा घरवारणे ॥१॥

इति अक्षयनिधिनप स्तवन सपूर्ण ॥

श्री अक्षयनिधि तपनु आराधन करनार सुदरीनी कथा

जमुद्वीपना भरतक्षेत्रमा राजगृही नामनी नगरीमा मवर
 नामे शेठ वसे छे तेने गुणवती नामे स्त्री छे, ते खरखरी
 गुणवतीज छे. परतु पूर्वकर्मनी विपरीतताथी तेना गृहमा
 दस्टिे रासो करेलो छे स्त्री भरतार महा मुठकळीए आजी-
 विका चलावे छे मुखना इच्छन प्राणीए धर्मारोधन करवानी
 जर छे, ते शिवाय सुखसपत्तिनी प्राप्ति थइ शक्ती नथी

अथदा गुणवतीए गर्भ धारण कर्यो. गर्भना प्रभावयी,
 शेठनी आजीविना सावनो वृद्धि पाम्या बीजा बेपारीओ
 पोताना भागमा तेने वपार कराववा ठाम्या, अने तेम करता
 करता शेठनो व्यापार वृद्धि पाम्यो, एटले द्रव्यनु आगमन
 एटण वधारे रधारे घरा लाग्यु गर्भरिधति पूर्ण थये गुणवती

पुत्रीनो प्रसव ययो तेनी नाळ दाट्या माटे खाडो खोदता तेमाथी निधान निरुद्ध्य पुत्री भाग्यशास्त्री गणाणो राजमदिर सुधी ए रात पहोंची, अने राजाए पण तेने बहु मान आप्पु अर्थात् शेडने घेर ययापणी मोरुली सरर शेठे पण ए भाग्यशाली पुत्रीनो जन्ममहोत्सव पुत्री जेवो कर्यो, अने वारमे दिवसे सगाकुडुमीओने आमश्रण करी जमाडीने तेमनी समक्ष पुत्रीनु सुदरी नाम स्थापन कर्यु अनुरूपे ते वीजना चदनी जेम वृद्धि पामया लागी

ते सुदरी रमता रमता ज्या ज्या जमीन खणे छे त्या त्या सहजे मणिमाणेरुक्त निधान प्रगट थाय छे तेवो रोते पुढळ निधान प्राप्त थयाथी शेठ पण घणो द्रव्यवान् थयो, अने सर्वत्र तेनी आयरु इजत विगैरेमा वशरो धवा लाग्यो आ जगतमा द्रव्य ए एवी महत्त्वाची वस्तु गणाय छे क तेना वडे मनुष्यने दरेक प्रकारनी महत्ता प्राप्त थाय छे द्रव्यवान् मनुष्य विचक्षण न होय तो पण विचक्षण गणाय छे, पाचमा पुढाय छे अने ज्या जाय छे त्यां ते बहुमान पामे छे एट लुज नही पण तेनु वचन कोइ उलघतु नयी अहीं एटलु याद राखवानुं छे के द्रव्यप्राप्तिनी साथे जो अभिमाननी वे दुराचरणनी प्राप्ति थइ होय छे तो तेने पूर्वोक्त लाभ मळीं

શક્તા નથી, માટે દ્વંષ્યાન્ મનુષ્યોર્ તે વે પ્રકારથી તદ્દન દૂર રહેવાનું ધ્યાનમા રાખવું

મૃત્તી અનુક્રમે યૌવનાગસ્થા પામી, ઇટલે તે રમા અને ઝવેશી જેવી ગોભવા લાગા શેઠના મનમા તેને જોડને વરની ચિંતા ઉત્પન્ન થઈ યોગ્ય કન્યા જો યોગ્ય વરને આપવામા આવે તો જ તે દપતી સુખ મેળવી શકે છે, તેથી ઈચ્છિત ચિંતા શેઠને ઉદ્ભવે ર સ્વાભાવિક છે અને ઈચ્છી અનુપમ રૂપાને યોગ્ય વર મળ્યો મુશ્કેલ પડે તે પણ ગરીબાત છે પરંતુ ઈચ્છી સયોગ પૂર્વકર્મને અનુસાર મઠી આવે છે મુદરીનો સમગ્ર તેજ નગરમા સમુદ્રધિય નામે શેઠની કમઠથી નામની સ્ત્રીથી જન્મેલા શ્રીદત્ત નામના શ્રેષ્ઠીપુત્ર સાથે થયો મોટો ધામધૂમ સાથે તેનો પાણિગ્રહણ મહોત્સવ કરવામા આવ્યો અને ઘણા દ્રવ્ય સહિત તેને સાસરે વહાવવામા આવી

પુણ્યપનોતી મુદરી સાસરે આવી કે તેજ વરવતે ત્યા પગના અંગુઠા પડે એક કાકરો કાઢતાં નિધાન પ્રગટ થયું, સોનૈયાથી ભરેલો પૂર્ણ કાશ્ચ નીકળ્યો, તેથી શ્વશુર પક્ષના સર્વ માણસો પ્રસન્ન થયા, અને તેનું માન આવતાવેતજ દૃઢિ પામ્યું તેના મોસાલ પક્ષવાલાં મુદરીને જમરા માટે તઢી, ઇટલે ત્યાં પણ નિધાન પ્રગટ્યું એમ તે જ્યા જ્યા પગલાં

છે અર્થાત્ જેને ઘેર જાય છે ત્યાં નિધાન પ્રગટે છે. ઇટલે તેને સર્વત્ર માન મળ્યા લાગ્યુ રાજા પણ તેને થદુ માન આપ્યા લાગ્યો.

અયદા ધર્મઘોષ નામના આચાર્ય ત્યા પધાર્યા રાજા પ્રમુખ સર્વ લોકો વદન કરવા ગયા મુદરી પણ પોતાના કુટુમ્બ સહિત વાદવા આવી ગુરુમહારાજને વાદીને સર્વ યોગ્ય સ્થાને બેઠા. ઇટલે ગુરુએ સમયોચિત્ દેશના આપી. તેમા દાન શીલ તપ ને ભાવરૂપ ચાર પ્રકારના ધર્મનો ઉપદેશ કરતા તપ ધર્મની વિશેષ ઝાણ્યા કરી 'તપના આરાધન વડે કર્મની નિર્જરા થાય છે, ઇટલુજ નહીં પણ ઈવા અપૂર્વ પુણ્યનો વધ થાય છે કે જેથી આગામી ભવે અનેક પ્રકારની મુલ્કસપત્તિ પ્રાપ્ત થાય છે. નિરોગી અને વચ્ચાન શરીરની પ્રાપ્તિ માટે તો તપ જ મુલ્ક સાધન છે, પૂર્વ ભવ તપ કરનારાઓ આ ભવમા અપરિમિત વચ્ચાલા, અને નિરોગી થાય છે,' ઇત્યાદિ ધર્મદેશના આપ્યા તાટ મુદરીએ ઉમા યદ્ને વિનયપૂર્વક આચાર્ય ભગવતને પુછ્યુ કે "હે સ્વામી ! મેં પૂર્વે કેવા ધર્મનુ આરાધન કર્યું છે કે જેથી આ ભવમા મારે પગલે પગલે નિધાન પ્રકટ થાય છે ?" ગુરુમહારાજે કહ્યુ કે—“ પૂર્વે ભવે ને અજ્ઞયનિપ્રિ નામનો તપ શુભ માત્ર પૂર્વક કર્યા છે, તેના યોગે આ ભવમા સ્થાને સ્થાને

નિધાનની માસિ થાય છે. ” સુદરીણ માર્થના કરી કે-“ હે સ્વામી ! મારા પૂર્વ મરુતુ સરિસ્તર વૃત્તાત કહો કે મેં કેવી રીતે ઇ તપનુ આરાધાન કર્યું હતુ તેનો મને સ્વર પડે, જેથી આ ભવમાં પળ હુ તેનુ વિશેષ મફારે આરાધન કરું ” ગુરુમ હારાજ કહે કે સામલ -

“ સ્વેટકપુર નામના નાગરમા સંયમ નામના ગ્રેઠ વસે છે તેને ઋજુમતિ નામે સ્ત્રી છે. તે નિરવર અનેક પ્રકારના તપ કરે છે, અને જ્ઞાનની પણ ભક્તિ કરે છે તમે રત્નાવલી, કનકાવલી, એકાવલી વિગેરે તપ કર્યા અને ધોજા પણ નવા નવા પ્રકારના તપ ગુરુમહારાજને પુત્રી પૂત્રીને કરવા ઝાગી. તેનુ ચિત્ત તપધર્મમાં જ રક્ત થયેલું છે હોદ્દો પણ તેની અહ-નિશ મગસા કર છે, અને તેના તપધર્મની અનુમોદના કરે છે.

હવે તેના પાહોશમાં એક વેમુ નામ છેત્રું છે. તેને સોમ-સુદરી નામની સ્ત્રી છે તે ધર્મથી મગસે છે, મૂર્ખ છે અને અભિમાન તથા ઇર્ષ્યાથી ભરપૂર છે કહુવતિની થતી પ્રવૃત્તિ તે સામલી શક્તી નથી. નીતિવાર છે કે ક ‘ આવી નવું સ્ત્રી ઘણી હાની કરે છે. ’ કમુ હાં-

શુભવો વ્રાહ્મણ ઘેગાણું ઢોર, સાધો વાગ નાસતો
રાંઠ માહ ને માતો સાત, ૧ સ્ત્રી પ્રતિષ્ઠ

अन्यदा समय शेठना घरनी नजीरुमा अधिनो उपद्रव
 ययो समय शेठनु घर तेमा सगडावानी तैयारीमा ज हतु,
 परतु ऋजुमतिना तपना प्रभावथी तेनु काइ पण बळ्यु नहीं.
 आ आग लागी त्त्यारे सोमसुदरी मनमा बहुज खुशी यइ के
 हवे समयशेठनु घर जरूर बळी जशे, पण तेने तो काइ पण
 नुक्कशान न थयु. षटले तेनु मन निराश थइ गयु अन्यदा ते
 गाममा धाड पढी ते बखने पण सोमसुदरी मनमा राजी थइ
 के जरूर आमा समयशेठनु घर लुटाइ जशे पण तेनु काइ गयु
 नहीं धाडनाळा तेना घरमा पेठा ज नहीं आ प्रमाणे जोइने
 पण सोमसुदरी निराश थइ अनुक्रमे समयशेठ ने ऋजुमति तो
 धर्मनु धाराधन करीने स्वर्गें गया

हवे सोमसुदरी ऋजुमतिनी अत्यंत इर्ष्या करवाथी
 अनेक प्रकारना कर्मबपथी भारे थइ तेने परिणामे तेजभवमा
 तेना घरमाथी द्रव्य नाश पाम्यु, अने दरिद्रावस्था प्राप्त थइ.
 अनुक्रमे तेवी दुःखी स्थितिमा ते मृत्युने वश थइ परतु देव-
 योगे अंत समये कोइ श्रावकना मुखथी तेणे नप्रकार मत्र सा
 भळ्यो. तेना प्रभावथी ते मृत्यु पामीने मधुरा नगरीना राजा
 जितशत्रुनी चार पुत्र उपर पुत्री थइ. सर्वरुद्धि तेनु नाम
 पाड्यु पाच धावथी पळानी ते गोटी थइ. एवामा जितशत्रु

રાજાની ઉપર કોઈ શત્રુ રાજા ચઢી આવ્યો તેની સાથે યુદ્ધ કરના જિતશત્રુ રાજા મૃત્યુ વામ્યો, શત્રુનું સૈન્ય નગરમાં પેટુ, પટલે રાંજલોક સર્વ જેમ આવ્યુ તેમ નાસવા લાગ્યુ રાજ્ય હેલ ઘરો શત્રુ રાજા પુટ્ટી છોડી, સર્વ ક્રુદ્ધિ ત્યાંથી પક્લી ભાગી તે અટ્ટીમાં જતા મૂઠી પડી આલો રાત્રી પશ્ચિમણ કરતા સગારે રસ્તે ચઢી પછી વનખટ્ટ પટે આજીવિકા કરતી ત્યા વનમાં જ રાત્રી થઈને રહી કારણ- કે તેને અન્ય કોઈ આશ્રયસ્થાન નહોતુ કે જ્યા જઈને તે આશ્રય લઈ શકે તેની ચૌવનાવસ્થા વ્યતીત થવા માડી, અને સાસારિક મુશ્વતી પ્રાપ્તિ શિવાય નિષ્ફળ જવા લાગી

અંયદા ત્યા કોઈ વિચાર આવ્યો, તેને તેને રૂપવતી જોઈને તેની સાથે પાણિગદ્ધન કર્યું, અને ત્યાંથી પોતાને ઘેર લઈ ગયો પરંતુ તે દુર્ભાગિણીના પગલાથી તે જ દિવસે તે વિદ્યાધરના ઘરમાં અગ્નિપ્રકોપ થયો, તેથી તેની સર્વ ક્રુદ્ધિ અસ્મસાત્ થઈ ગઈ વિચારે તેને પાછી વનમાં મૂકી ત્યાંથી ત્યાં એક પલ્લિવતિની દૃષ્ટિ પડી, પટલે તે મિલ્લ તેને પોતાની પાઠમાં લઈ ગયો, ત્રીજે દિવસે તેનું ઘર પણ અગ્નિમાં વઘી ગયું પટલે ઘરા ચોર લોકો આ સ્ત્રીની નિંદા કરવા લાગ્યા, અને તેના માઠા પગલાનું માઠું પરિણામ જ

लाग्या पठी ते पछिपतिए एक सार्थवाहने त्या वेची. सार्थवाह
तेने लहने चाल्यो पटले ते मार्गमा ज लुटाणो. तेनी वधी
ऋद्धि चोर लोको लुटी गया, मात्र शरीर भर ज रघो तेजे
आने तजी दीधी पटले ते एरुली एक सरोवरने कीनारे
निराश यइने उभी उभी पोताना पापनो पश्चात्ताप
करवा लागी

एवामां भाग्ययोग एक मुनि महाराजा त्या आवी
चढया, राजपुत्री तेने पगे लागी, पटले मुनिए तेने मीठे
वचने घोलावी पठी ऋद्धु के-“ हे वृत्ते ! तु राजपुत्री छे,
छता आ सरोवरने कीनारे उभी उभी भुं विचार करे छे ?
तें पूर्वभ्रमा धर्मो जीवनो जे मत्सर कर्यो छे, तेना पापथी
हुं आ भवमा राजपुत्री थया उवा तारा पितानु मरण थयु,
राजमंडल लुंटायो, तारे भागवु पडयु, वनचर यइ, दुःख पापी,
तेमा खेचरे लइ जइने क्षणभर मृत्यु आप्यु पण पाळु वनचर
थयु पड्यु. आ उरो वारा पूर्वकर्मनो विपाक छे पूर्व वायेठा
पापक्षती शाराभोनो ए वधो विस्तार छे ”

आ प्रमाणे हानी शुरुना उचनो सामळीने ते राजपुत्रीए
तेमनी पासे आवीने तेमने वदना करी पूछ्यु के-“ ह भग
वन् ! आ दु खयी मारो छुटकारो श्री रीते थाय ते वतावी

हूँ हवे दुःख खपी खरीने अंत्यत कायर थइ गइ छु ॥ गुरु
 महाराजे कछु के-“ हे बत्से । जो तारे आ दुःखथी छुट्ठु न
 होय अने सुखसपत्ति प्राप्त करवौ होय तो तू अक्षयनिधि
 नामनो तप कर ने ज्ञाननी भक्ति कर 'श्रावण' वद ४ थी ए
 तप शरु करवौ, ने भाद्रपद शुभि ४ थे (सर्वच्छरीर) 'पूर्व'
 करवौ तेमा यथाशक्ति एकांतर जयवाम ने एकामणु करवु
 अथवा १५ एकासणा करी प्राते (१६ बे दिना) जयवाम
 करवौ वे टरु प्रतिक्रमण 'करवां, गिपत्र पाचु, जिनपूजा
 करवी, एक हुभ म्थापी तेने अक्षय वडे पाता, त्रंगंज वे
 हजार गुणणु गणतु आनो विशेष विधि फलमर्गो जाणी
 लेयो आ तप करता कोई पण प्रकारे शोरी 'शक्ति' गोप
 चरी नहीं आ तप पूर्वोक्त निधि ए उठ्ठो रूप वर्ष पर्यंत
 करवौ चौथे वर्षे शासनदेवीनी आश्रय गिनिने ए तप
 करवौ आ तपनु शुभ मने आग, कुराशे आ भवमा
 पण सुखसपत्ति प्राप्त थाय छे नै इत्यन्त नो अदृश्य रुडि
 सिद्धि सुख सौभाग्यादि प्राप्त वपुइ ॥

आ प्रमाणे गुरु महाराज...
 ए तप करवानो स्वीकार करी...
 ग्रामांतरे गइ अने पारकी सेना...
 आजीविका व... गो...

एटले विधिपूर्वक ते तप शरु कर्यो, पण द्रव्यस्थितान बहु मद होवाथी यथाशक्ति कर्यो, वीजे वरस तेथी सारी रीते कर्यो, वीजे वरस तेथी वधारे सारी रीते कर्यो, चोथे वरस कांइक द्रव्यवान् थयाथी विशेष सारी रीते आदर्यो तेवामा केटला-एक विद्याधरो क्रीडानिमित्ते ते राजपुत्रीवाळा गामे आव्या-तेमा ते राजपुत्रीनो स्वामी विद्याधर पण हतो, तेणे पोतानी प्रियाने ओळखी, एटले तेणे त्याथी लड जडने पोतागा अंतःपुरमा राखी राजपुत्रीए त्या तप पूर्ण कर्यो सारी रीते शीयळ पाळ्यु अने शेषायु अणसण वडे पूर्ण करी हे सुदरी । तु आ संरशेठनी पुत्रीपणे उत्पन्न यह पूर्वभवे तें अक्षयनिधि तप कर्यो हतो तेना प्रभावथी आ भयमा तने पगले पगले निधान प्राप्त थाय छे. तपनो प्रभाव अर्चित्य छे. ”

आ प्रमाणे गुरुमहाराजे कहेलो पोतानो पूर्वभव साभळाने ईहापोह करता सुदरीने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु तेणे पोतानो पूर्वभव दीठो गुरु महाराजो तेणे कथु के “ हे स्वा-मोर् ! आपे जे प्रमाणे मारो पूर्वभव फगो ते प्रमाणे सत्य छे. में जेवा आपना वखाण साभळ्या हता तेवाज आप ज्ञानी अने चारित्रपात्र छो ” आ प्रमाणे गुरुमहाराजनी स्तुतिकरी बांदीने ते पोताने घरे आवी पछी श्रावण वदि ४ आवतां तेणे मोटा आढबर साथे अक्षयनिधि तपनी शरुआत करी ते वखते राजा, राणा, शेट, सामंत्र विगेरे सर्व ते तप करवामा

सामेल थया, ते तपनी शरणांतर करी त्याग्यी नो विद्वे
 निधान भगट यवा लाग्यु, एटले ते द्रव्यनो तेणे ममावनादि
 कार्योमा बहोळे हाये व्यय करवा माटयो, तेनु नाम मुन्नी
 हतुं ते भुलाइ गयु अने सी तेने अक्षयनिधिना नामयी . ज
 घोडावा ने ओज्जववा लाग्या मोटा मनयी तेणे तप करीने
 तेनु पूर्ण फळ सपाटन कर्युं भाद्रपद शुद्धि पंचमीने त्रिंसे
 तेणे ज्ञानभक्ति अने महोरसर पूर्वक सीनी साय पाणु कर्युं,
 देव देवीओ पण तेनी प्रशमा करवा लाग्या, अने तेना तपनी
 अनुमोदना करवा लाग्या.

अनुक्रमे सासारिक सुखमोग भोगवा मुन्नीन चार
 पुत्रो ने चार पुत्री थइ, माते ममार तज्जु चारित्र अगी
 कार करी, निरनिचार पात्री, चार सज्जि करनो क्षय करी,
 केवलज्ञान प्राप्त करी, अनेक जीवान तज्जु करी, असय
 निधि तपनी विशेष पुष्टि करी, कायुं करे ते मिटिरदने
 पामी त्या अनन ज्ञान, अनन शरणांतर चारित्र, अने
 वीर्य ए अनन चतुष्टयी युक्त थ कायुं ज्ञान करुं
 एक अरगाहनामा अनन सिद्धी देना देव
 अवगाहीने रहेला ते करवा अक्षयनिधिने
 पण मनुष्यभवना शरीर करुं, अरगाहना
 यावत् अक्षयधितिने पारुं.

उपर प्रमाणे अक्षयनिधि तपनो महिमा श्रवण करीने उत्तम जीवोए अयश्य ते तपनु आराधन करया उन्नपाळ यवु पूर्णना अशु । कर्मानो क्षय करवामा तप प्रयत्न साधन छे आ तप तो ऐहिक सुखसंपत्तिने पग आपनारोछे, परतु तेना करनारे आ तप करता आ भय सवरी सुखनी इच्छा वीठकुल न करवी. आशीभाणे तप करयाथी तेना फळमां बहुज क्षति यइ जाय छे, तेथी आ भय सवरी अथवा परभव सवरी पग सासारीक सुखनी आशा धरीने आ अथवा कोइ पग तप न करयो. प्रभाव ज एवो छे के तेनु शुद्ध मने आराधन करनारने आ भव सवरी पग सुखसंपत्ति प्राप्त थाय ज छे, परतु तेनो वान्यने माटे खेनी करनारने मात्र यता वृग (घास) ना लाभ जेरी छे तेनु वास्तविक फळ तो जन्ममरणादि सर्व दुःख मात्रनो नाश करी अग्निनाशी सुरने आपवु ते छे माटे जो इच्छा कररी तो ते ज सुखनी करवी. आ वात दरेक तप करनारे खास ध्यानमा राखवी अने तप करवामाढवो तयारी ज क्रोधने तो जलाजलिज दइ देवी-पासेज आववा न देयो. आटली उपदेश भूलयो नहीं इत्यल.

इति अक्षयनिधि तप सवधी विधि विधान स्तवनकथादि सपूर्णः

उपर प्रमाणे अक्षयनिधि तपनो महिमा श्रवण करीने उत्तम जीवोए अग्रश्य ते तपनु आराधन कररा उतमाळ यदु पूर्वना अथु । कर्पोनी क्षय करामा ता प्रवळ साधन ठे आ तप तो ऐहिक सुखसंपत्तिने पग आपनारोडे, परतु तेना कर नारे आ तप करता आ भव सत्री मुखनी इच्छा वीरकुल न करी. आशीभार तप करवाथी तेना फळमां बहुज क्षति यइ जाय छे, तैथी आ भव सत्री अथवा परभव सत्री पण सासारीरु सुखनो आशा धरीने आ अथवा कोइ पग तप न करयो प्रभाव ज एवो छे के तेनु शुद्ध मने आराधन करनारने आ भव सत्री पग सुखसंपत्ति प्राप्त थाय ज छे, परतु तेनो धायने माटे रोगी करनारने प्राप्त यता तृग (घास) ना लाभ जेरी छे तेनु वास्तविक फळ तो जन्ममरणादि सर्वदु ख मात्रनो नाश करी अपिनाशी सुखने आपतु ते छे माटे जो इच्छा करवी तो ते ज सुखनी करवी. आ बात दरेक तप करनारे खास ध्यानमा राखवी अने तपकरवामाडवो तयारपी ज क्रोडने तो जलाजलिज दइ देवी-पासेज आग्रा न देवी. आटलो उपदश भूलवो नहीं इत्यल.

इति अक्षयनिधि तप सवधी विधि विधान स्तयनकयादि सपूर्ण.

अथ श्री वीश स्थानक तप-विधि

घोश-पदना नामो	नघ घार घाली	फाउ सग नालो	खमा समण	प्रद- क्षिणा	
१ मा अग्निहस्ताण	२०	२४	२४	२४	आ तपमा दरेक
, सिद्धार्ण	२०	१५	१५	१५	पदना घोशघोश
पयषणम्म	२०	४५	४५	४५	उपयान करी आ
ज यरियाण	२०	३६	३६	३६	पया जाणप, पम
, धंगण	२०	१०	१०	०	अवेक पदनी अ
, उयञ्जायाण	२०	२५	२५	२५	नेव आनी घोश
, लोणस-व	२०	२७	२७	२७	पदे घोश आली
, साहण					पू थाय ते अवे
, नाणस्त	२०	५	५	५	अ ओतो छ महि
, दसनस्त	१०	६७	६७	६७	नामा छेयट पूरी
धिणयस्म	२०	१०	१०	१०	करवी जाणप व
, चरित्तस्म	२०	७०	७०	७०	एले दशयय घोश
धभवयधारिण	२०	९	९	९	ओला पूण थाय
किरियाण	२०	२५	२५	२५	घोश घोश उप
तवस्म	१०	११	१२	१२	घास सुधी पक
, गोयमस्म	२०	२८	२८	२८	एक पःनु आरा
, जिणाण	२०	२०	२०	२०	एक वःनु एटले
सयमधारिण	२०	१७	१७	१७	अवेक वदनु धी
धमिनध	२०	५१	५१	५१	श धार गणणुका
, नाणस्त					
, सुयस्त	२०	१२	१२	१२	आदि
, ति-यस्त	२०	५	५	५	

वीश स्थानक तपमां खमाममण देतां बोलवाना

—ॐ—

दुहा.

जे जे पदमा जेटला खमासमण देवाना होय त्यारे ते पदनो
दुहो दरेक चखत घोळीने खमासण देवां.

(१ पहेळु) पगम पचपरमेष्ठीमा, परमेश्वर भगवान,
अरिहतपद ॥ च्यार निक्षेपे ध्याइए, नमोनमो जिनमाण १

(२ जुं) गुण अनंत निर्मळ यया, सहज स्वरुप उजाश,
सिद्धपद अष्टरुम मठभय करीं, भये सिद्ध नमो तास २

(३ जु) भावामय ओपध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि,
प्रवचनपद. त्रिभुवन जीवने सुखसुरी, जयजय प्रवचन वृष्टि ३

(४ थु) छत्रीण छत्रीशी गुणे, युग प्रधान मुर्णीद;
आचार्यपद जिनमत परमत जाणता, नमोनमो ते सुरींद.

(५ मुं) तजी परपरिणती रमणता, लहे निजभाव स्वरुप
पिविरपद, स्थिर करता भनि लोकने, जयजय पिविर अनृप ५

(६ ठु) बोध सूक्ष्म विणु जीवने, नहोय तत्व प्रतीत,
उपाध्यायपद भणे भणावे सूत्रने, जयजय पाठक गीत ६

- (७ सु.) स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता सग,
साधु पद साधे शुद्धानदता, नमो साधु शुभ रग. ७
- (८ सु) अध्यातम ज्ञाने फरी, विघटे भव भ्रम भीति;
ज्ञान पद सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमोनमो ज्ञाननी राति. ८
- (९ सु) लोकालोकना भाव जे, केवलि भापित जेह,
दर्शन पद सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ९
- (१० सु) शौच गुणथी महा गुणी, सर्व धर्मनो सार,
विनय पद. गुण अनतनो केंदए, नमो विनय आचार १०
- (११ सु) रत्न जयी विष्णु भाधना, तिप्फळ कही सदीव,
चारित्र्य भावस्यणनु नियान छे, जयजय सजम जीव ११
- (१२ सु) जिनमतिभा जिनमदिरा, कचननां करे जे जेह,
ब्रह्मचर्यपद ब्रह्मवतथी बहु फळ लहे, नमोनमो शीयलमुदेह १२
- (१३ सु) आत्म बोध रिण जे क्रिया, ते तो वाळ्फ चाल,
क्रिया पद तत्पारथथी धारीये, नमो क्रिया सुविशाल १३
- (१४ सु) कर्म स्वपावे चीकणा, भाव मगल तप जाण,
तप पद पचास लब्धि उपजे, जयजय तप गुणखाण १४
- (१५ सु) छह छह तप करे पारणु, चउ नानी गुण शम,
गोयम पद ए सम शुभ पात्रको १५

- (१६ मु) दोष अगारे क्षय गया, उप-या गुण जय अग;
जिन पद वेयाख करीये मुदा, नभोनमो जिन पद सग, १६
- (१७ मु) श्रद्धातम गुणमे रमे, तमी इद्रिय आशश,
सयम पद थिर समाधि सतोपमा, जय जय सजम वश १७
- (१८ मु) ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चरित समकित मूल,
अभिनवज्ञान अजर अमर पद फळ लहो, जिनवर पदरीफुल १८
- (१९ मु.) वक्ता श्रोता योगथी श्रुत अनुभव रस पीन,
श्रुत पद, ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुखलीन. १९
- (२० मु) तीर्थ यात्रा प्रभार ठे, शासन उन्नति काज,
तीर्थ पद परमानद विलासता, जय जय तीर्थ जहाज २०

ज्ञानपचमी तपविधि

जो शक्ति होय तो दरेक मांसनी दर पचमी अथवा अजवाली पाचम के छेवट कार्तिक शुदि पाचमे तो जरूर तेनु आराधन करखु ते दिवमे “ नमो नाणस्स ” ए पदनी २० नरकारवाली गणवी, पाच अथवा एकावन लोगस्तनो काउस्सग करवा ने खमासमण तेटला देवा विगेरे दरेक तपनी विशेष विधि अन्य म्यछेथी जाणी लेवी.

दीवालीनु गरणुं.

- १ श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नमः
ए पदनी नवकारवाली वीश गणवी.
- २ श्री महावीरस्वामी पारगताय नमः ” ”
- ३ श्री गौतमस्वामि सर्वज्ञाय नमः ” ”

अथ श्री सिद्धचक्र (नवपद) ओळीनी विधि

पदना नामो	नवकारवाली	काउस्तगना	लोयस्त	खमासमण	प्रदक्षिणा	वृण	भोजन कर जात
ॐ ह्रीं नमो अग्निनाथ	२०	१२	१२	१२	१२	श्वेत	चोखा, प्रमुख
नमो सिद्धाण	२०	८	८	८	८	रक्त	घड प्रमुख
आयरियाण	२०	३६	३६	३६	३६	पोत	घणा, प्रमुख
उषडज्ञायार्ण	२०	२५	२५	२५	२५	नील	मग प्रमुख
लोय सद्वसाहूण	२०	२७	२७	२७	२७	हूण	अडद प्रमुख
दसणस्त	२०	६७	६७	६७	६७	श्वेत	चोखा, प्रमुख
नाणस्त	२०	५१	५१	५१	५१		
चरित्तस्त	२०	७०	७०	७०	७०		
तथस्त	२०	१२	१२	१२	१२		

आ तप आशो अने चैतस्नी शुद्ध ७ यो १५ सुधी रोज आवेलथी करवो, एम वपमा बे चार करता साढाचार वर्षे नय ओळी पूरी करी, अने यत्र मुजब क्रिया, गणथु विगेरे करवा, त्रिकाल देववदन, पूजा, पडिलेहणा, पडिकमणादि क्रिया करवी

नव पद आराधनमा दरेक पदे बोलवाना दुहा

- (१ लु) अरिहत पद ध्यातो यरुो,दन्वह गुण पञ्जायरे,
अरिहतपद. मेद छेद करी आतमा, अरिहितकुपी धायरे,
वीर जिनेश्वर उपदिशे, साभल्लजो चित्त लाइरे,
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मळे सवि आइरे वी १
- (२ जु.) रूपातीत स्वभाव जे, केवल दसण नाणीरे,
सिद्ध पद ते ध्याता निग आतमा, होय सिद्धगुण खाणीरे वी २
- (३ जु.) ध्याता आचारज भला, महामत्र शुभ ध्यानीरे,
आचार्य पद. पच मस्थाने आतमा, आचारज होय माणीरे. वी ३
- (४ थु) तप सज्जाए रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे;
उपाध्यायपद उपाध्याय ते आतमा, जग बधवजग भ्रातारे वी. ४

- (५ मु) अममत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि सोचेरे,
साधु पद साधु मुखा ते आत्मा, शु मूडे शु लोचेरे वी. ५
- (६ वु) श्म सवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवेरे;
दर्शन पद दर्शन तेहिज आत्मा, शु होय नाम धरारेरे वी ६
- (७ मु.) ज्ञानावरगी जे कर्म ठे, क्षय उपशम तस यायरे,
ज्ञान पद तोहुएएहिज आत्मा, ज्ञान अघोषता जायरे वी. ७
- (८ मुं) जाग चारित्र ते आत्मा, निज स्वभावमां रमतोरे;
चारित्र पद. लेश्या शुद्ध अलक्ष्यो, मोहवने नवि भमतोरे वी ८
- (९ मु) इच्छा रोधे सबरी, परिणति समता योगेरे,
तप पद तप तेएहिज आत्मा, वर्ते निज गुण भोगेरे वी. ९

नवपदनुं चैत्यवदन

सकठ मगल परम कमला, केलि मजुल मदीर, भवकोटी
सचित पापनाशन, नमोनवपदजयरु, ॥ १ ॥ अरिहंत
सिद्ध सूरीश वाचरु, साधु दर्शन सुख कर, वरदानपद चारित्र
तप ए, नमोनव, ॥ २ ॥ श्रीपालराजाशरीरसाजा,
सेवतां नव पद वर, जगमाही गाजा फीति भाजा,

॥ ३ ॥ श्रीसिद्धचक्र पसाय मंरुट, आपदा नासे अरु, वळी
 वीस्तरे मुख मनोराछीन, नमो, ॥ ४ ॥ आंचिल नर दीन
 देव वदन, त्रण टक गीरतर, वे वार पढीम्मणा पढीलेहण,
 नमो, ॥ ५ ॥ त्रण काळ भावे पुजीए, भवतारक तोर्थकर,
 तीमगुणणु दोय हजार गगीए, नमो, ॥ ६ ॥ एव वीधी
 सहीत मन वचन काया, वद करी आराधीये, तप वर्ष साटा-
 चार नवपद, शुद्ध साधन सागीये, ॥ ७ ॥ गद्द कष्टचूरे
 शर्मपूरे, यक्षविमलेश्वरवर, श्रीमिठचक्र प्रताप जाणी, विप्रप
 विलसे मुखभर, ॥ ८ ॥

नवपदनु चैत्यवदन (वीजुं)

श्री सिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास, नवदिन
 नव आंचिल करी, कीजे ओळी खाम, ॥ १ ॥ केसर चदन
 घसी घणा, कस्तुरी वरास, जुगतै जीनवर पूजीया, मयणाने
 श्रीपाळ, ॥ २ ॥ पुजा अष्ट प्रकारनी, देववदन त्रण काळ,
 मत्र जपो त्रण वाळने, गुणणुं तेर हजार, ॥ ३ ॥ कट टल्यु
 उवर तणु, जपता नवपद ध्यान, श्री श्रीपाल नरिद थया,
 वाध्यो वमणोधान, ॥ ४ ॥ सातसो कोढी मुख लढा, पाम्या
 निज आवास, पुण्ये मुक्ति वधु वर्या, पाम्या लील विलास, ॥ ५ ॥

माहावीरस्वामीनुं चैत्यवदन १

त्रिस वरम घरनाम जास, त्रण ज्ञाने स्वामी, चउ नाणो
 चारीत्रीया, निज आतमरामी, ॥ १ ॥ वार वर्ष उपर बली,
 साढापट मास, घोर अभीग्रह आर्यो, किम कहिए तास,
 ॥ २ ॥ माघव शूदो दशमीदिने, पाण्या केरळ ज्ञान, पदम
 कहे महोळव कयो, चौविहसुर मडाण, ॥ ३ ॥ इती

चैत्यवदन, (वीजु)

त्रिस वरस केरलपणे, वीचरीया महावीर, पात्रापुरी
 पत्रारिया, श्रीजीन शासनवीर, ॥ १ ॥ हस्तीपाठ नृपरा
 यनी, रजु सभा मोझार, चर्म चोमागु त्या रथा, लहि अभि-
 ग्रहसार, ॥२॥ काशीकौशल देशना, घणाराय अदार० स्वामी
 मुणी सहु आरीया, उदणने नीरधार, ॥ ३ ॥ सोळ पहोर
 दिधि देशना, जांणी लाभ अपार, दीधी भविहित कारणे,
 पीधी तेहिज पार, ॥४॥ देवसर्मा बोधन भणि, गोयम गया
 मुजाण, कार्तिक अपावास्या त्रिवसे, प्रभु पाण्या निर्वाण,
 ॥ ५ ॥ भार उध्योत गयो हवे, करो द्रव्य उध्योत, इम कही
 राय सर्वे मली, किधि दीपक जोत ॥ ६ ॥ दीवाली

थी यद्दृष्ट, जगमाहं प्रसिद्ध, पत्र कहे आरागता, लट्टिए अ-
विचल रद्धि. ॥ ७ ॥

अथ पर्युपणनी थोय

भो भो भव्यजना सग यदि निवे वांछा तदा पर्युपण ।
श्रीपर्वाणुपणाभिप्रय कुरुत स्वारावन सादर ॥ द्रव्यार्चा
सुमचदनै, स्तुतिभरै कृत्वा च भावार्चना । मानुष्य सफल
पित्त सुमहै रहन्मतोल्लासकै ॥ १ ॥ ऋचामास्तीति दिग्भ-
वाविश्र वसुदिग्युग्मोपवासान् शुभान् । रम्यार्चां च विधत्त
भो भवदरा तीर्थकराणा नवा । पष्ठ कृत्य जिनाति मस्य
चरित कणैश्च पीत्वा मुदा । श्री वीरस्य जनूत्सव च कुरुत
सुल्लुचर्नि भोजना ॥ २ ॥ जीवाना मवन विधत्त सुधिय
कृत्वाष्टमनागत् । भाव्या निर्मल भावना भविजनै' कैवल्य
लक्ष्मीकृते ॥ कन्याणानि जिनस्य भो गणभृता वाट च
पार्श्वभो । नम्यादतरकाणित शृणुत सन्नामेयवृत्त तथा । ३ ।
साध्वाचारमखडित पित्त सन्मोलच सूत्र थवै' । चैत्याना
परिपाटिका चतनुत स्वालोचना सार्पिका ॥ जनून् क्षाम्यत

वसल च कृत्न साधर्मिकाणा मुदा । पित्रोव चतुरस्य बाह-
रतु सा सधस्य सिद्धायिका ॥ ४ ॥

श्री नेमिनाथनी स्तुती.

श्री गीरनार गीश्वर सणगार, राजीमति हैडानो द्वार,
जीनरर नेमहुमार पुग्ण करुणारस भदार, उगार्चा पशुआ
एवार, समुद्रविजय मल्हार मोरकरे मधुरार्किंगार, विवे विवे
कोवठना टहुकार, सहस्र नमे सहकार. सहसा उनपा हुआ
अणगार, प्रभुजी पाम्या कचठमार, पोहाता मुक्ति मोझार,
॥१॥ शिद्धगीरीए तीरथमार, आगु अष्टापद मुखकार, चित्र
कुट वैभार मोयनगीरी सम्मेत श्रीकार, नदीश्वर वरद्विप
उदार, जोहां पावनविहार कुडल रचरुने इशुकार, साखता
असास्रता चैत्यविचार, अरर अनेक प्रकार. कुमति वयणे म
भुल गमार, तीरथ भेटे लाम अपार, भवियण भावे जुहार
॥२॥ मगट छठे अगे बखाणी, द्रौपदी पाडवनी पटराणी,
पुजा जीन प्रतिमानी विधिशु कीधी उलटआणी, नारद
मिध्यादृष्टि अम्नाणी, छाटयो अपिरती जाणी. थायरु कुष्णी
ए सहीनाणी, समकीत आलावे आख्याणी, सातमे अगे

व्याणी पूजनीक प्रतिमा अकाणो, एम अनेक आगमनी
 वाणी, ते सुणजो भवीपाणी, ॥ ३ ॥ कटैकटी मेरळ घु-
 रीयाली, पाये नेपुरण क्षण चाली, उज्जत गीरीरखवाली
 अघरवाल जीस्यापरवाली, कचनवानकायामुठुमाली, करले
 अवाडाली बैरीने लागे विकराळी, सधना विघ्न हरे उज-
 माली, अवादेवी मयाडी. महिमा ए दसोदिशी अजुआली,
 गुरु श्रीसयविजय सभाली, दोन दोन नित्य दिवाळी,
 ॥ ४ ॥ सपूर्ण

श्री ज्ञान पचमीनी थोय

तीर्थकर श्रीवीरजिणदा, मिदारण कुल गगन दिणदा,
 त्रिशला राणीनदा. कहे ज्ञान पचमीदिन मृत्वकदा,
 मतिश्रुनावरणीमटभयफदा, अन्नाण कुभी मयदा दुग चउ
 भेट अद्वारीगृदा, समकित्तमतिथी उल्लुमे आनदा, छेदे दु
 मति ददा चउद भेदे धारो श्रुत चदा, ज्ञानी दोषना पद
 अर विंदा, पुजो भाव अमदा, ॥१॥ अवतरिया सविजगदा
 धार, अवधिनाण सहित निरधार. पामे परम करार. माग
 शिर श्रुदि पचमी दिनसार, श्रावण श्रुदि पचमी शुभसार, सु

विधि नेम अवतार, चैत्र वदि पचमी घणी श्रीकार, चंद्र
 प्रभच्यवन मंगल विस्तार, वत्स्यो जय जयकार० त्रीजा ज्ञान
 दर्शन भडार, देखे प्रगट द्रव्यादिक चार, पुण्य अनत अधि
 कार, ॥ २ ॥ वैशाख वदि पचमी मन आणी, कुणुनाय
 सयम गुणठाणी, यया मन पर्यवनाणी दीक्षा महोत्सव अत्र
 सर जाणी, आये सुरपति घणी इद्राणी, वदे उलट आणी.
 विचरे पावन करता जग प्राणी, अध्यात्म गुगश्रेणी वखाणी,
 स्वरुप रमण सहीनाणी अपमादि रिद्धीवताप्राणी, नमोनाणी
 ते आगम वाणी, साभली लहो शिवराणी, ॥ ३ ॥ कार्तिक
 वदि पचमी दिन आवे, केवलज्ञान सभव जिन पावे, प्रभुता
 पुरण यावे, अजित सभव जिन अनत सोहावे, चैत्र शुदि
 पचमि मुक्ति कहावे, ज्येठ शुदि ते तिथि दावे, धर्मनाथ पर
 मानदपद पावे, सासन सूरि पचमी वधावे, गीत सरस कड
 गावे. सद्य सकल भणी दुशल वनावे, ज्ञानभक्ति बहुमान
 जणावे, विजय लक्ष्मी सूरिपावे, ॥ ४ ॥ मयुरी

दीवालीनु स्तवन

साभलरे मोरि सजनी बेनी, रजनी किहा रही
आव्याजीरे, ए देशी

सुर सुख भोगवि त्रीशला कुखे. रहिने जन्म लहीने जीरे,
अनुरुमे ललना सग छडि, विचर्या दिक्षाग्रहीने, प्रगटी दीवा-
लीजीरे, पांम्पा कलझान कर्म प्रजालीजीरे, ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ चारनीकायना देर मलिने, समवसरण करे सारो
जीरे, तिहा सिहासने बेसी प्रभुजी, धर्म कहे बहु प्यारो,
म ॥ २ ॥ अनादिमिष्याति जीव भव्य, करण त्रप्य करीने
जीरे; अतर करणे आदि समये, सुख लहे समकीत धरीने,
म ॥ ३ ॥ ते शुद्ध दर्शन आत्मा कहीए, सेस बीजा हवे
सुणीएजीरे, रूपाय योगद्रव्य उपयोग, वीर्य ज्ञान चारित्र
भणीए, म ॥ ४ ॥ एहवे इद्र भूति जस सुणीने, आव्या
प्रभुने पासेजीरे, वेदना अर्थ सुणीने साचा, सजम लिधो
उलासे, म ॥ ५ ॥ वीरना गणवर यथा इग्यार, साधु चौद
हजारजीर, छत्रीश सहसते सात्री जाणो, चरण करण सु
विचार, म. ॥ ६ ॥ लाखने ओगणसाठ हजार, श्रावक बहु
श्रीकारजीरे, सहस अठारने त्रणज लाख, श्रावीमानो परिवार,
म ॥ ७ ॥ इम ए सधनी थापना करता आव्या अपापा

गामजीरे, इतिपाल हखें इम बोले; मुज घर आव्या साम,
 प्र. ॥ ८ ॥ अल्प आयु पोतानु जाणी, अनुकया आणी
 नायजीरे, सोल प्रहरनी देशना दीयी, मलीया अठार नर-
 नाथ, प्र. ॥ ९ ॥ कार्तिक वद अमासनी राते, वर्षमान मोझे
 पांहीनाजीरे, नारो अपउरा सुरनरमलीया, पण गौतमतिहां-
 नांवा, प्र. ॥ १० ॥ वीरनिर्वाण सुर मुखथी जाणो, मोह
 कर्पो चरुचुरजीर, फेरल ज्ञानने दर्शन मगट्यु, गौतमने उगते
 सुर, प्र. ॥ ११ ॥ वीर गौतम निर्वाण कवल, कल्याणीक
 दीन जाणीजीरे, भावद्रव्य दोय भेदें कीजे, दिवाली भवि
 प्राणी प्र. ॥ १२ ॥ पोपहपटिकमणा जिन भक्ति, सुदर वेष
 करीजेजीरे, धर्मचद्र मधु गुण गातां, जस कमला नीत्य वरीये,
 मगटी दीवालीजीरे प्र. ॥ १३ ॥ सपुर्ण

पजुसणनी सज्जाय

आज मारें मन वस्यारे, भविजन पर्व पजुसण मोहोटा-
 होळी बळेवने नोरवा जाणो ए सर्वे ठे खोटा ॥ आज मारे
 ॥ ए आकणी ॥ चौथ छठ अठम अठाइ मास खमण पण
 फरिए, देगुरु आणा मन धरिए, तो भवसायर तरिए ॥
 आज मारे ॥१॥ अठाइ धरनी पोसह कीजे, गुरु वाणी

पीजे, कल्पमूत्र घर पधरावीजे भाये मन उल्सी जे ॥ आज
 मारे ॥ २ ॥ कुचर गयवर रर चदावी दौल नीशान धन-
 दायो, कल्प मूत्र गुप्त पासे राखो पूजा भावना भारो ॥ आज
 मारे ॥ ३ ॥ तेण घर तिन रडो जाणी काडिया तेरनेचारो,
 सप्तसरी दिन धारमा मुगी क्रोध कपायने मारो ॥ आज
 मारे ॥ ४ ॥ मन वचकाया ए जे सोया पाप कर्म बहू कुडा,
 मिच्छामी दुकड दंड करीने पडीकमगा करो रुडा ॥ आज
 मारे ॥ ५ ॥ सरल चित्ते आगा मधुनी जे नर नारी धरसे,
 कहे लघु वाळक नीतीविनयनो ते शिव लीला धरसे ॥ आज
 मारे ॥ ६ ॥ सपूर्ण

अथ श्री चक्राखालीनी सत्राय

कहेजो चतुर नर ए कोण नारी, धरमीजनने प्यारीरे ॥
 जेणे जाया वेदा सुखकारी, पण छे वाळ कुमारीरे ॥ कहेजो०
 ॥ १ ॥ ए आरुणी ॥ कोइ घेर रात्रीने कोइ घेर लीली
 कोइ घेर दीसे पीळीरे, पच रपी छे वाळकुमारी मनरजन
 मंत वाळीरे ॥ कहेजो० ॥ २ ॥ हैदा आगळ उरी रावी नप
 णाशुं धषाणीरे, नारी नहीं पग मोहन गारी जोगीश्वरनेप्यागीरे ॥
 कहेजो० ॥ ३ ॥ एक पुरप तस उपर ठाहे चार सली शु

सेलें एक बेर ठे तेहने माये, ते तस फेड न मेलेरे, कहेजो०
 ॥ ४ ॥ नव नव नामे सहू कोइ माने, कहेजा अर्थ विचारोरे
 ॥ विनय विजय उवझायनो सेवक स्वविजय बुद्धि सारोरे
 म्हैजो० ॥ ५ ॥

अथ श्री अयवती मुकुमालनु तेर ढालीयु.
 दोहा

पास जीनेश्वर सेबीये, त्रेत्रोममो जीनराय ॥ विन
 निवारण सुखकरण, नामे नर निधि थाय ॥ १ ॥ गुण गाड
 खते करी, अयवती मुकुमाळ ॥ फान देइने सामळो, जेम होष
 मगळ माळ ॥ २ ॥

ढाल (१) ली

(देशी त्रिपदीनी)

(बे कग्जोडी तामरै भद्रा विनये) ए देशी

मुनिवर आर्य सु इस्तिरे, किणहीअ अवसरे नयरी उज-
 यणी समोसर्था ए ॥ १ ॥ चरण फाण व्रत धाररे, गुणमणि
 आगरु, सहू परिवारे परिवर्या ए ॥ २ ॥ वन वाढी आरा-
 मरै, लेइ तिहा रक्षा, दोय मुनी नगरी पदावीया ए ॥ ३ ॥
 थानरु मागण फाजरे, मुनिवर मळपता, भद्राने घेर आवीआ

ए ॥ ४ ॥ शेडाणी कहे तापरे, शिष्य तुमे कहेना, शेकाजे
 आव्या इहा ए ॥ ५ ॥ आर्य सुहस्तिना शिष्य रे, अमे लु
 श्राविका, उद्याने गुरु ठे तिहा ए ॥ ६ ॥ मागुल्लु तुम पासरे,
 रहेवा स्थानक प्राशुक अमने दीजीए ए ॥ ७ ॥ वाहनशाल
 जिशाळरे, आपी भावधु, आवी टहा रहीजी ए ॥ ८ ॥ सप
 रिवार सुविचाररे, आचारज तिहा, आवी सुखे रहे सदा
 ए ॥ ९ ॥ नलिनी गुल्म अ ययनरे, पहेली निशासमे, भणे
 आचारज एरदा ए ॥ १० ॥ भद्रा सुत गुणवतरे, सुखी सुरो-
 पम, स्पवत रळीयामणो ए ॥ ११ ॥ अयवती मुकुमाळरे, सातमी
 भूमिका, पाम्यो सुख विलसे घणु ए ॥ १२ ॥ निरुपम नारी
 वनीसरे, स्प अपळरा, शशी वयणी मृगलोयणी ए ॥ १३ ॥
 कहे जिन हर्ष विनोदरे परम प्रमोद शु लीळाळाडे अति
 घणी ए ॥ १४ ॥

दोहा.

प्रथम निशा समए मुनि, करी पढिकमणु सार आलो-
 यण आलोचता, कुमर सुण्यो तेणीवार ॥ १ ॥ राग रगे
 भीनी रहे, अवर नहीं कोइ आज लेवो देवो मातावधु, कुमर
 बढो शिरताज ॥ २ ॥

ढाल (२) जी

(माया मोहे दक्षिण मेलाइ) ए देशी

मधुरे स्वरे मुनिवर करे, होजी सूत्रतणी सक्षाय ॥ श्रवणे
 सुपरे सांभळी, होजी आवी कुमरने दाय ॥ अय० ॥ १ ॥ अरुणी ॥ निषय प्रमाद तजी करी,
 होजी तनमन वचन लगाय, ए मुख मे क्रिहा अनुभव्या, होजी
 जे कहे मुनिवर राय ॥ अय० ॥ २ ॥ कुमर करी एम सोचना,
 होजी वेठा ध्यान लगाय, हृदयमाही विचारता, रोमरोम उल्ल-
 सित थाय ॥ अय० ॥ ३ ॥ इम चिंतवता उपयु, होजी
 जाति स्मरण ज्ञान ॥ आव्यो तिहा उतावळो, होजी धरतो
 मन शुभ ध्यान ॥ अय० ॥ ४ ॥ गुरना चरण कमळ नमी,
 होजी वेठो मनने कोड, भगवत भद्रा सुत अछु, होजी पूछु वे
 करजोड ॥ अय० ॥ ५ ॥ नलिनी गुल्म विमानना, होजी तुमे
 सुख जाणो केम, सुरि कहे जीन वचनयी, होजी अमे जाणुछु
 एम ॥ अय० ॥ ६ ॥ पूरव भवे हु उपन्यो, होजी नलिनी
 सुन्म विमान, ते सुख सुजने सांभर्यु, होजी जाति स्मरण ज्ञान
 ॥ अय० ॥ ७ ॥ ते सुख कडो केम पामीए, होजी केम
 लहीए ते ठाम. कृपा करी सुजने कडो, होजी माहरे तेहशु काम

॥ अय० ॥ ८ ॥ ए सुख मुजने नवि गमे, होजी अपूर्व सरस
 विमान, खारो दग्गिजठ ।रुप गमे, होजी जेणे कीधो पयपान
 ॥ अय० ॥ ९ ॥ एटला दिन हुं जाणतो, होजी मे सुख लखा
 श्रीकार ॥ मुज मरीखो जगकोड् नहीं, होजी सुवीयोइणे
 ससार ॥ अय० ॥ १० ॥ हवे मे जाण्या कारमा, होजी ए
 सुख फठ म्पिक ॥ कहे जीन हर्ष हवे रुहो, होजी म्पि
 पामु ते नाक ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

ए ससार असार छे, साचो स्वर्गनो द्वार, तिन ज्ञान
 घटमां वसे, सुख तणो नहीं पार ॥ १ ॥ रयण मोती तिहा
 झळहळे, कृष्णागर धवकार, नाळ मृदम दुदुभी तणा, नाट-
 कनो नही पार ॥ २ ॥

॥ दाठ ३ जी ॥

(तु कुठदेवी सेवी सदा) ए देशी

संयमयी सुख पामाए, जाणो तुम निरधार, कुमरजी ॥
 सुर सुखनु रुहेतु किधु लहीए शिव सुख सार, कुमरजी ॥
 सयम ॥ १ ॥ ए आंकगी ॥ नर सुर सुख एणे जीवडे,

पाम्या अनतीवार कुमरजी ॥ नरपति सुरपति ए थयो, न लही
 वृषि लगाव ॥ कुमरजी ॥ संयम ॥ २ ॥ काग लियोळी प्रियकरे,
 परिहरे मीठी द्राव, सुगुरुजी ॥ नलिनी गुल्म विमाननो,
 सुजने ठे अभिलास, सुगुरुजी ॥ संयम ॥ ३ ॥ ते भणी
 सुजथु करी मया, धो गुरुजी चारित्र, सुगुरुजी ॥ ढील कीसी
 हवे कीजीए, लीजीए प्रन सुपवित्र, सुगुरुजी संयम ॥ ४ ॥
 श्री आचारज एम वहे, हजीय अडे तु वाळ ॥ कुमरजी ॥
 तु लीलानो लाडणो, केळ गर्भ सुकुमाळ, कुमरजी ॥ संय-
 म ॥ ५ ॥ दीक्षा दुकर पाळवी, पच महाप्रत भार, कुमरजी ॥
 माये मेरु उपाडयो, तरवी जळधि अपार, कुमरजी ॥
 संयम ॥ ६ ॥ मीग तणे दाते करी, लोहघणा कोण खाय ॥
 कुमरजी ॥ अग्रि फरस कोण सही शके, दुकर प्रन निरमाय ॥
 कुमरजी ॥ संयम ॥ ७ ॥ कुमर वहे मधु साभजो, दुःख
 विण सुख किम थाय, सुगुरुजी, अल्प दुःखे वटु सुख हुवे ॥
 ते तो दु ख न गणाय, सुगुरुजी ॥ संयम ॥ ८ ॥ तप करयो
 अति दोहीळो, सहेया परिसह घोर, कुमरजी ॥ वहे जीन
 हर्ष सुभट यइ, हणवा कर्म कटोर, कुमरजी ॥ संयम ॥ ९ ॥

दोहा

कुमर कहे मुनिगयने, वदू वे करजोड, ॥ शूरा नरने
सोहडु, शूरे रणमा द्रोड ॥ १ ॥ ते माटे मुज दीजीण, नयम
भार अपार ॥ र्म खपायु सद्गुरु, पामु भयजळ पार ॥ २ ॥

॥ दाळ ४ थी ॥

(कपूर होय अति उजळोरे) ए देशी करजोडी आगळ
रहीर, कुमर कह एष राण ॥ शूराने श्रु दोहिटुर, जे आगमे
निज माण, मुनिसर, माहरे त्रशु फाज ॥ मुजने दीठा नवी
गमे रे, कृद्धि रमणी ए राज ॥ मुनी० ॥ १ ॥ ए आफगी ॥
साचा करी जाण्या हतार, फाचा सहु मुख एह ॥ ज्ञाननपण
मगट्या हवेरे, हरेहु छडीश तेह ॥ मुनि० ॥ २ ॥ दुषरत्र
चिर पाळ्यारे, ते तो मे न खमाय ॥ त्रत लेइ अणसण आद-
र्रे, कष्ट अटप जेम याय मुनी० ॥ ३ ॥ जो त्रत लोए
सुगु कहेरे, तो साभळ महाभाग, घेर जइ निज परिवारनीरे,
तुतो अनुमति माग ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ घेर आधी माता भणीरे,
अयवति सुहुपाळा ॥ कोमळ वयणे विनरेरे, चरणे लगाढी भाल ॥
माताजी ॥ माहरे त्रत श्रु काम ॥ ५ ॥ अनुमति द्यो त्रत
आत्तरे, आर्य सुदस्ति सु पास, निजनरभय सफळो करुरे,
पूरो माहारी आश ॥ माताजी० ॥ ६ ॥ सुरख नर जाणे

नहीरे, क्षण लखेणो जाय, काळ अचित्यो जावशेरे, शरण
 न कोइ याय ॥ मानाजी० ॥ ७ ॥ जेम पखी पजर पडघोर,
 वद दुग्व निशदीश, माया पजरमा पडथारे, तेम हु विशवा
 वीग ॥ मानाजी० ॥ ८ ॥ ए वघन मुज नवि गमेरे, दीठां
 पण न मुहाय ॥ कह जीन हर्ष अंगज भणीरे, सुखीयो फर
 पोरी माय ॥ मानाजी० ॥ ९ ॥

दोहा

आ काया अशाश्वती, सध्या जैरों वान अनुमति आपो
 मातजी, पामु अमर विमान ॥ १ ॥ केहनां छोरु कहेना वाळर,
 रूहना मायने वाप, पाणी जाशे एरुळो, साये पुण्यने पापा॥२॥
 ॥ दाळ ५ मी ॥

(वान म काढो हो त्रत तणी) एदेशी, माय कहे रूठ
 साभलो, रात सुणावीएसीरे॥सो वाते णक वातडी, अनु-
 मति कोड न देसीरे ॥ माय० ॥ १ ॥ ए आरणी ॥ त्रत
 शु हु श्यो नानडा, ए शी वात मरुशीरे ॥ घर जाए जिण-
 रातथी, ते केम कीजे दाशीरे माय० ॥ २ ॥ केणे घुतारे
 भोळव्यो, के केणे भूरकी नांखीरे ॥ बोले अयळा बोळडा,
 दीसे छत्री मुख दाखीरे ॥ माया० ॥ ३ ॥ तु निश ।

मुखमा रग्यो, बीजी गत न जाणोरे ॥ चारित्र छे बच्छ
 दोहिल्ल, दु'ख लेवु छे ताणोरे ॥ माय० ॥ ४ ॥ भूख वृषा
 न स्वमी शके, पाणी रिण पळ जायरे, अरस निरस जळ
 भोजने, बाटवी छे निज कायरे ॥ माय० ॥ ५ ॥ इहा तो
 कोमळ रेशमी, सुतु सोड तळाइर ॥ डाभ सथारो पायरी,
 भूयें सुतु छे भाइरे ॥ माय० ॥ ६ ॥ आछा पहेरण पहेखा,
 बाघा दिन दिन नवलारे, तिहा तो मेला कपडा,
 ओढवां छे नित्य पहेळारे ॥ माय० ॥ ७ ॥ माये लोच करा
 बवो, रईवु मलिन सदाइरे, तप करवा अति आकरा धरवी
 ममता न काइरे ॥ माय० ॥ ८ ॥ कठण होए ते ष सहे, ते
 दु ख नें न स्वमायरे ॥ कहे जीन हर्ष न कीजोर, जीण वाते
 दु ख थायरे ॥ माय० ॥ ९ ॥

दोहा

कुमर कह जननी मुणो, मुनि चक्रि बळदेव, सधमयी
 सुख पापीया, ते सुगजा सु'ब हेव ॥ १ ॥ अर्जुनमाळी उद्धर्यो,
 दड महारी सोय, परदेशी रोहीणो, बलीमात सु गावुतोय ॥ २ ॥
 समदृष्टि हुए समकित्ती, सयम मुर सुख लीन ॥

कोई तरियां खंडी तारसे, मुजमन हुआ प्रवीन ॥ ३ ॥ एकन
 भजन माहर, तु पण आदर एम ॥ किम आपु हु अनुमति,
 स्नेह तुटे कह कम ॥ ४ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(लाल रगावो ररना मोळीया ए देशी,)

हो कुमर इश्यु मन चिंतने, ते मुजने कोइ नापे निशारे;
 जाउलु विणु अनुमते, तो गुरु पण न दीये दीशारे ॥ ह०
 ॥ १ ॥ ए आरुणी निज हाये केश लोचन कीयो, भलो
 वग जतिनो ली गो रे ॥ गृहायास तज्यो सयम भज्यो, निज
 मन मायो तेम कीयो रे ॥ ह० ॥ २ ॥ भद्रा देखी मन
 चिंतने, एतो वेप लइने वेओरे ॥ एहने राख्यां हने थु हुवे,
 जमीए मीठाभणी एओर ॥ ह० ॥ ३ ॥ वण्ड साभळ, त
 ए थु कीयो, मुज आश लता उन्मूळीरे ॥ तुज मुख देखी
 मुख पामती, दइ जाय छे दु गनी शूळीरे ॥ ह० ॥ ४ ॥
 तुज नारी बरीसे वापडी, अरळाने जोवनरतीरे ॥ कुचवी
 रहती निशदिने, तुज मुख सामु निरखतीरे ॥ ह० ॥ ५ ॥
 गे रहेती ताहरे मन उपरे, तुज वयण कदी नरी काप्योरे
 अवगुण पाखे ए नारी थु, कहने शा माते काप्योरे ॥

॥ ६ ॥ ए दु ख सम्यु जाशे नहीं ॥ पण जोर नहीं तुज क-
हेरे ॥ जीन हर्षभद्रा नारी मळी, आखडीए आसु रेडे रो॥७॥

॥ दोहा ॥

उतीसे नारी मळी, कहे पियुने सुविचार ॥ वय लघुता
रूपे भला, शो सयमनो भार ॥ १ ॥ उन छे करवत सारीखा,
मनछे पवन समान॥वावीशे परिसह सह, उचन अमारो मान
॥ २ ॥ मयगळ नीवळ्या, ते कैम पाछा जाय ॥
फरम मृभट्ट दूरे करी, पहोचवु शिवपुर ठाय ॥ ३ ॥

॥ दाळ ७ मी ॥

(घरे आयोजी आनो मोरीयो ए देशी)

अनुमति दीधी माये रोरता, तुजने थाओ कोड कल्या-
णरे ॥ सफळ थाओ तुज आशडी, सयम चढजो सु प्रमाणर
॥ अनु० ॥ १ ॥ ए आरुणी कुमरतणा वछित फळ्या, हर्ष्यो
निज चित्त मझाररे ॥ आव्यो गुरु पासे उमह्यो, साये परि-
वार अवाररे ॥ अनु० ॥ २ ॥ सद्गुरुना चरण कमळ नमी,
भाखे फरजोडी कुमारोरे, प्रवहण सम गुरु मुज भणी, ससार
समुद्रयी तारोरे, ॥ अनु० ॥ ३ ॥ आचार जे उच्चरावीया,
घतपच विषे सह साखेरे ॥ पन धन एवा जेणे सुख तज्या,

न नारी मळी एम भाखेरे, ॥ अनु० ॥ ४ ॥ भद्रा कहे
 आचारज भणी, तुमने कहुं छु कर जोडरे ॥ जाळवजो एने
 र्ही परे, मुज काळजदानी कोररे ॥ अनु० ॥ ५ ॥ तपकगता
 एन वारजो, भूरयानी करजो सारोरे ॥ जनमारें दु ख जाण्युं
 नरी, अहमिंद्रतणो अवतारो रे ॥ अनु० ॥ ६ ॥ माहरे
 बागी पोथी ए हनी, टीरी छे तुमवे हाय रे ॥ हवे जिम
 जणा तेम जाणजो, बहाली माहरी ए आथ र ॥ अनु० ॥
 ७ ॥ साभळ सुत जोत्रतआदर्युं, तो पाळजे निरति
 वाररे ॥ दूषणमलगाढीश त्रत भणी, तु जेम पामे भवपार रे ॥
 अनु० ॥ ८ ॥ धन्य गुरु जेहनोए शिष्य धयो, धन्य मात
 पिता कुळ जासरे ॥ जेहने कुळ ए मृत उपयो, इम घोलावी
 क्षत वाद रे ॥ अनु० ॥ ९ ॥ एम कही भद्रा पाळी र्गी,
 दुःखणी बहुअरा छेइ सायरे ॥ जिन हर्ष अल्प जळ पाळली,
 घेर आवी थइ छे अनायरे ॥ अनु० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

घेर आरी सामु बहु, मन मान्यो उदोसैं ॥ श्रीकृ-
 ष्ण मंदिर कीजो, पिबु पिण सोनीरास ॥ १
 पलक न रहि शुक, सेअछगे मुज कृ-
 वळक वळफ

॥ ढाळ ८ मी.

(माह्णानी देशी)

सदगुरुजी हो कहु तुमने करजोड, चिर चारित्र पळ
 नही ॥ सदगुरुजी हो ॥ नप क्रिया नव थाय, कर्म खरे जेह्यो
 सही ॥ १ ॥ स० ॥ तुमचो अनुमति थाय, तो हुं अणसण
 आदर ॥ स० ॥ थोडा शाळ मझार, फट करी शिवपद गह
 ॥ २ ॥ मुनिवरजी हो ॥ जेमसुखपायेतुज, तेमकरो
 देवाणु मिया ॥ मुनि० ॥ गुरुने चरगे लागी, सहु श्रुं स्वाम
 णडा फीया ॥ ३ ॥ मुनि० ॥ आव्यो जिहा ममसान, वळे
 मृतक बहि धगगगे ॥ मुनि० ॥ विहामणो पिकुराळ, दखंतां
 मन ऊभगे ॥ ४ ॥ मुनि० ॥ पित्रवन इगे नामे, टोसे
 यमरन सारिखो ॥ मुनि० ॥ ळाटाळा विहा रुच, कु
 कथेरो सारिखो ॥ ५ ॥ मुनि० ॥ आव्यो तिण
 वन माह, तिहा आरी अणसण कर्यु ॥ मुनि० ॥ फा
 विघाणा पाय, ततक्षण लाही जर, ह्यु ॥ ॥ ६ ॥ मुनि०
 पण पोंदी परनाळ, लोही पायस उक्ष द्यो ॥ मुनि० ॥ सौभाग
 सुकृमाळ, कडण परिसह आदर्यो ॥ ७ ॥ मुनि०
 शत्रुस्तर तिणीवार, कोधो अरिहत सिद्धने ॥ मुनि० ॥ धर्म
 चारज ध्यान, धर्युं जिन हर्ष भले मने ॥ मुनि० ॥ ८

॥ दोहा ॥

बन आगी गोरडी, प्रात समय गुरु पास ॥ मरजोत
 श्वरी बदे, नाइ न दीसे नास ॥ १ ॥ मुनि कहे अनुर्मा
 आ, काउसग रह्यो स्पशान ॥ मन इच्छा घर पापीया
 पाच्या देव विमान ॥ २ ॥

॥ ढाळ ९ मी ॥

(घोवीडा तु धोजे मननु घोतीयु रे) ए देशी

तिण अवसर एक आगी जजुकीरे, माये लेइ पोताना
 जळरे ॥ भक्ष करवाने दशदिशे फररे, अवळी सयत्री की
 घळरे, ॥ तिण० ॥ १ ॥ ए जाकणी ॥ चरण 'रुपाण'
 आगी वासनारे, वाळ सहित आगी रन माहरे ॥ एण
 सभारी शोधतीरे, खावा लागी पग थुं साहारे ॥ एण
 ॥ २ ॥ चटचट चूटे दाते चामडीर, गटगटखाये लोहीर
 बटवट चर्मतणां बटका भरे रे, उटवट मोडे नाडी नसारे
 तिण० ॥ ३ ॥ प्रथम महरे ते जजुक जजुकीरे, एक
 भयण कीघरे, तोपण ते वेदनाए रुप्यो
 बीजो पग लोध २ ॥ तिण०
 मोडीनेरे, पण ते न कजे
 अशाश्वतीरे

महर पेट विदारीयुरे, जाणे कर्म विदार्याणरे, चोथे महरै
 प्राण तजी करीर, नलिनोगुल्म लद्या सुख तेणरे ॥ तिण० ॥
 ॥ ६ ॥ सुरवदीने तास शरीरनोरे, महिमा करे अनेक प्रफा-
 ररे कह जीन हर्ष तेणे अरसर मळीरे, वदण आवी सघळी
 नारर ॥ तिण ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

गोरी सवि ज्ञान्वा थड, आरी नगरी मझार ॥ सुख
 कमळाणु मालती, सासु देसे तेणीवार ॥ १ ॥ कुळमा कोळा-
 हळ यया, मदिर खाराधाय, तन भोगी जोगी हुए, कर्म
 करे ते थाय ॥ २ ॥

॥ दाठ १० मी ॥

(भणे देवनी केणे भोळव्या) ए देशी.

वांटी पूठे गुरुभणी, अमचो दिसे नहि भरनार,
 ॥ पूज्यजी ॥ किहा गयो मुनि ते कहो, उपयोगे कहे तेणी
 वार ॥ कामीनी ॥ वादी० ॥ १ ॥ ए आरणी आव्या हता
 पद्दोत्या निहां, दु ख पापी मरण सुगेय ॥ कामिनी ॥ हा हा
 करे धरणी हळे, आसुटा छुट्या नयणेय, ॥ कामिनी ॥ वादी० ॥
 ॥ २ ॥ हीयडु पीटे हाय शु, उपाडे शिरना कश, ॥ कामिनी ॥
 बिले पिपुचिण पज्ञोणी, मस्नेही पाम कलेश, ॥ कामिनी ॥

॥ द्वाळ ११ मी ॥

(देखो गति दैवनीर, अथवा गजराजनी) ए देशी
 दुःखभर वरीसे रोजनीरे, गदगद घोले पचन ॥ परलोकें
 पाँत्या सहारे, सासु तुम पुन रतन ॥ देजो मुने मुजरोरे, अरे
 सासुना जाया, अरे जणदीना वीग, अरे अमुलक हीरा,
 अरे मन मोहन गारा, अरे प्रीतम प्यारा ॥ देजो मने मुजरोरे
 ॥ १ ॥ ए आरुणी ॥ भद्रा सुणी दुःखणी थडरे, पुन मर
 णनी रात चार पदोर दुःख निर्गामीरे, पदोती तेणे वन पर-
 भात ॥ देजो ० ॥ २ ॥ कयेरी वन दुडनार, पुन कळेवर दीठ ॥
 नारी माय रोड पडीरे ॥ नयगे जळवारा नीठ ॥ देजो ० ॥ ३ ॥
 हीयडा फाटे का नहीरे, जीवी काड करेश ॥ अतरजामी
 चाल्होरे, ते तो पायो परदेश ॥ देजो ० ॥ ४ ॥ हीयडा तु
 निडु थयुरे ॥ पहाण जहयु व लोह ॥ फीट पापी फाटयु
 नहीरे ॥ वहाला तणे विच्छोहे ॥ देजो ० ॥ ५ ॥ हीयड
 हणु कटारीपरे, भुसु अगारे देह ॥ सामलता फाटयु नहीरे,
 नो खोटो वाहरो नेह ॥ देजो ० ॥ ६ ॥ इणीपरें झरे गोर-
 डीरे, तिमही जू झरे माय ॥ त्रिपु पियु मुखथा करी रहीरे,
 वापडा मुर जाय जाय ॥ देजो ० ॥ ७ ॥ दु लभर सायर
 उळवारे, छीमीमां न ॥ प्रेत कारज सुतनु कियुरे,
 जिन हर्ष हिये अरुठाय ॥ देजो ० ॥ ८ ॥

ळार, राये त्रिखरी जाय, ॥ मोरी० ॥ ५ ॥ छपन
 माहे जेम राकडोरे, धनपामीहुओशेठ ॥ जागी निहा
 ठीकरे, भाग्धु माया हेठ ॥ मोरी० ॥ ६ ॥ स्वप्न
 जेम अशाश्वता रे, महु देरसाय छे एह ॥ कहे जीन हर्ष वैरा-
 गीयारे, सामु बहुअर तेह ॥ मोरी० ॥ ७ ॥

॥ टाळ १३ मी. ॥

(छुण चहनी पीधुडो परदेशी ए देशी)

भद्रा घर आगी एम भारो, गर्भवती घर राखेर । अन्य
 वधु पडोती गुरु पासे, त्रत अमृत रस चारोरे ॥ भद्रा० ॥ १ ॥
 ए आकणी ॥ पचमहात्रत मूग पाळे दूषण मरळा टाळोरे ॥
 दुकर तप करी काया गाले, कलमल पाप पन्वाळोरे ॥ भद्रा० ॥
 ॥ २ ॥ अतकाळे सहु अणसण लेड, तनी औदारिक वेहीरे ॥
 देवलोऊना मुख ते लेड, चारित्रना फळ एहीरे. ॥ भद्रा० ॥
 ॥ ३ ॥ रुडे गर्भवती सुवजायो, देवल तेणे कगायोरे ॥
 पितामरणने ठामे सुहायो, अयवती पास फहायोरे. ॥ भद्रा० ॥
 ॥ ४ ॥ पामनीणेशरप्रतिपायापी, कुमति लत्ता जड कापीरे ॥
 निर्वि तेडनी त्रिभुवन व्दापी, सुरज जेम मवापीरे ॥ भद्रा० ॥
 ॥ ५ ॥ सरत सत्तर एकताळोसे, थुरुळ आशा वहीशेरे ॥
 चार शनीअर आठम दिवसे, कीरी सज्ञाय जगीशेरे ॥ भद्रा० ॥

१६ ॥ अययनी सुकुमार मलाये, मधुर स्वरं गुण-हरे-
 नीन हर्ष दापे वददाये, शांति हर्ष सुख पावेरान्द-
 ॥ ३६ ॥

श्री नेमीनाथनो चोक पहलो

(लावणी राग)

था नेमनिरजन बालपणे प्रह्लाचारी महदुष्ट-
 द अतुल बलधारी, टेक, गीर दौलत-
 माला, रसरगेआवेयदुपतिआपुमशाला, छं ऊर कुं
 मधु एछे शखउदाग, नदी गीरपर फन्ने अं कलकदारा,
 हरकपले लेकर गरम राजायो भागी, ॥ ३७ ॥ १ ॥ मुनि
 उख शब्दनीध्वना अति विरगळ, अर्धश शेषफणी
 अत पाताल, चित्त चमक्या मनमे दख झेला शि, धर हर
 कृप्या व्यतर पति उगीम, मुक्तिनीदरुतामति सुर नारी,
 ॥ प्रभु ॥ २ ॥ गगटया गिगीवग्ने रंभा गुर मोटा, घोडी
 वपने नाठा गजरथ मोटा, अकर सापर निर चड्या
 कडोळ, भांगी नखरनी टाळ दां माल, पुटया वर
 वेदार जवृकि नागे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ श्री सुरज तारा
 नीकना न्यामी. अरु करे मधुश अरु अंतरजा
 चरु फेर्वा शीर धनुष टंडा, शीकनि मरा
 नेपट्टमार, छं मार्गे अरु शीकनि शीकनि मोरा

पायक अटतालीससो कोट आगळ चाले, मली दसे न्गारग
 ह्परजी हरि जोडे, ॥ प्रभु ॥ १ ॥ बागे प्रसादु फारे शरि
 निसाण, यद्दसाजन महासन जोर चलावी जात, इम करता
 प्रभुजी उग्रमेन घेर आवे, देखी मृत प्रभुनुं राजुळ मन सुख
 पावे, तत्र करता प्रभु पांकार लाखो कोट, प्रभु ॥२॥ छोडावि
 प्रभुनी वृद्ध रथडो शले, घेर आरी प्रभुजी दान सरत्सरी
 आले, मुणी बातने राजुळ मुरटा धरणी दळति, इ नाथ थु
 नि धु कोटि रिलाय एम करति, लेइ सजम दपनि करम फठि
 नने तोटे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ वेहु पामि केवल ज्ञान मुगने जावे,
 प्रभु शीर वधु अनरामर पदवि पावे, गुरुगप कीर्ति गुण गाता
 रगसवाया, चोमासु रदि मेसाणे प्रभु गुण गाया, माणेक
 मुनि गावे लायणी मनने कोटे, प्रभु ॥ ४ ॥

॥ गहली १ ली ॥

श्री धमणपुरमां बस्यारे, श्री धमण जीन पास सनेदी.
 मणमी पदधन पासनारे, गुण गाता मन आसा ॥१॥ श्रेष्ठी
 स्तभनपुर तथा प्रेमचन्दरे, शुभ नामा ॥२॥ तस सुन रान सोभा-
 गीयारे, अमरचद्र गुणधामा ॥३॥ श्रीजीनवर गुरु धर्ममारे,
 जेनु मन अहनीस ॥४॥ न्यायनिपुण नीति मार्गमार. विचरे
 जे नीसदीसा ॥५॥ तसदुळ कल्पतरु समारे, पुत्र पाच अभि-

रास ॥ स ॥ पौषटमाट प्रथम थवार, सत्वाट्टि गुणरास ॥ स ॥ ४ ॥
 आनुसम्मेतने सिद्धागरोरे, केमरिया गिरनारा ॥ स ॥ इत्याट्टि
 वदु तीर्थनारे, काश्या सध उटारा ॥ स ॥ ५ ॥ श्रीचितामणि पास
 नुर, राम रच्यु अभिराम ॥ स ॥ प्रण्य शिखरथी शोभतुर, भवि
 जने विश्राम ॥ स ॥ ६ ॥ राज्यचट्ट मन ए ममेरे, फेलातो पुर
 माट्टि ॥ स ॥ नयव्याहार उच्छेत्तोर, स्वळ कल्पितज्याहि ॥ स ॥
 ॥ ७ ॥ सत्य धरमना रागथीरे अलग तरी व्ययहारा ॥ स ॥ भट्टिक
 जीवने उद्वयरि, ए उरकाग अवागाम ॥ ८ ॥ एम अनेक सुका
 जयोरे, जगमा जश बहु लीधा ॥ स ॥ च षडे एवा नरोरे, होजो
 जगत धमिद्ध ॥ मनेही ॥ ९ ॥

॥ गहुली २ जी ॥

साभळजो सरसी सुगुण पुत्रीना, मद्गुणनी श्रुय वातोर ॥
 नानी वयमा नेह धरमनो, ए अचरिज मन यातोर ॥ साभ-
 ळजो ० ॥ ए आफणी अमरचद्र सुत छगनभाइते, पौषटचट्टना
 भ्रातारे, पिता तणा पंये पळनारा, धर्म कर्ममां रातारे ॥ साभ-
 ळजो ० ॥ १ ॥ धर्मपति तस सदगुणने वश, मणी धेन जस-
 नामरे, तेमनी पुत्री परम पतित्री, हीराकुवर अभिराम २ ॥
 सांभळजो ० ॥ २ ॥ विनय विवेकी निर्मळ नेफी, हीरा हीरा
 सरसी रे. लघु वयमा तेठरणी लडने,

॥ साभळजो० ॥ ३ ॥ सवत ओगणीसे अगनोत्तर, कातिक
नी छठ काळीरे, जम धरे दुख विसरे सर्वे, मात पिताने
दिवाळीरे ॥ साभळजो० ॥ ४ ॥ सवत ओगणीसे अंसीमा,
वर्षाकाळ निवासीरे, श्री गुरुणी सौभाग्य श्रीजीए, विधि घट
प्रतनी भासी रे ॥ साभळजो० ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी चोये
प्रतमा, अक्षय तप आदरीयोरे, वय अगीआर वरसनी तोपण,
भाव भलो मन वरीओरे ॥ साभळजो० ॥ ६ ॥ पण गतिरुळनी
गहन कही ते, मिथ्याकदीनवयावेर, दश दिवस लघु
तपमा रहीने, हीरा स्वर्ग सिधावे रे ॥ साभळजो० ॥ ७ ॥
एवा गुण प्रतनी अभिलासी, धर्मनीतिनी वासीरे, पुनी रत्न
होजो सहूने कहे, चंद्र सिनोर निवासारे ॥ ८ ॥

श्री ऋल्पसूत्रनी गुहलो त्रोजो

। सहीयर शुणीयेरे भगवती सूत्रनी वाणी-ए देशी
भविण शुणजोरे, ऋल्पसूत्रनी राणी, मीठी लागे
वाणी अमीय समाणी ॥ ए आकणी ॥ ऋल्पसूत्रनी मोटो महीमा
वीर जिणद्र वखाणे, गौतम गणधर धीर वचनने, हृदय कम-
ठमा घारे, भवि ॥ १ ॥ अरिहत समनहीदेवजगतमे,
पदमे परम पट मोहु, तीरथमे शत्रुजय जाणो, सूत्रमे कल्प
वखाणो, भवि० ॥ २ ॥ देव गणोमे इद्र ठे मोटा, तारा गण
मे चंद्र, न्याय नीतिमे राम-वखाणो, काम स्वरुपमे जाणो,

भवि० ॥ ३ ॥ रूपवतीमे रही रभा, वार्जोत्रमे जेम भभा,
 मतवरमे औरावण फहीए, युद्धमे रावण लहिए, भवि० ॥४॥
 बाणावलीमे अर्जुन बलियो, गुणमे विनय व्यु भणीयो, मत्र-
 भांही नवकारज जाणो, युद्धिमे अभय गवायो, भवि० ॥५॥
 सब वृक्षमे कल्पवृक्ष जेम, अधिक बडाइ धार, सर्व सूत्रमे क-
 ल्पसूत्र तेम, पाप कल्क निरारे, भवि० ॥ ६ ॥ कल्पसूत्र जे
 भणसे गणसे, तिसत्तवार सांभलसे, वीर कहे सांभलजो गौ-
 तम, ते भवसायर तरंगे, भवि० ॥ ७ ॥ निधि रम निधि
 इदु उत्तरमे, रही सीनोर चौमासु, वीरविजय कहे वीर प्र-
 सुमी, वाणीमे नहि फाचु, भवि० ॥ ८ ॥

पजुसण पर्वनी गुट्टली चौथी.

सजनी मारी पर्व पजुसण आव्यारे, स० भव्य जीवमन
 भाव्यारे, स० धीपननीसरे जावरे, स० देव अट्टाइ मनावेरे
 ॥ १ ॥ स० जीया भिगमनो पाठरे, स० करे विवित्र पणे
 ठाठरे, स० गायनगरनरनाररे स० निजशक्ति अनु-
 साररे ॥ २ ॥ स० टान शिपल तप भावर, स० भव जळ
 तारण नावरे, स० पूजा प्रभावना थायरे, स० मनमे हर्ष न
 मायरे ॥ ३ ॥ स० साधु रहे चउमासर, स० सफल यद्-
 मन आसरे, स० लोच करे मुनि राजर, स० अभ्यतर गुण

काजरे. ॥ ४ ॥ स० सीद्दागण वदे नाथरे, स० एकज धर्म
 ठे साथरे, स० कल्प परे पधरावोरे, स० लेइर जन्मनो
 ल्हायोरे, ॥ ५ ॥ स० साइरगुम्पासेरे, स० आविये
 अति उल्लासरे, स० ज्ञान भक्ति शुभ फीजेरे, स० गुरु हस्ते
 कल्प दीजेरे, ॥ ६ ॥ स० कीजे अर्ज करजोडीरे, स० सभ-
 लावो कर्म तोडीर, स० सुत्र कल्प व्याख्यानरे, स० सुणिये
 अमिय समानर, ॥ ७ ॥ स० धर्म सारथी जाणोरे, स० श्री
 देवी स्वप्न वखाणोरे, स० मोरी, स्वप्न पाठक घोलायोरे,
 स० जम श्री पीरनी थावेरे, ॥ ८ ॥ स० प्रभुए दीक्षा
 धारीरे, स० मोक्ष गये कर्म जारीरे, स० श्री आदिनाथ
 वद्याणरे, स० पटावली ठे प्रमाणरे ॥ ९ ॥ स० मोरी, सा-
 माचारी प्रधानरे, स० बारसोनवव्याख्यानरे, स० सब-
 त्सरि पढिकमियेरे, स० सर्वापराधने रमियेरे, ॥ १० ॥ स०
 आत्म आनद भरियेरे, स० शिवलक्ष्मी हर्षे वरियेरे, स० व
 छुभ धर्म मनावोरे, स० आत्म हर्ष वधावोरे ॥ ११ ॥

मिथ्यात्व पर्वनी गहुली १ ली

सुण साहेली मिथ्यापर्वतु करवाओडीदेने, बेनी छोडी देता
 दुख जाये, सुख थाये आपण सहुने, सुण साहेली ॥ ७
 आकणी ॥ घोळ चोथ चाई आने आवी, घी भेश तणु

हु तो लावी, घडलानी रातो साभळीये बहुनेतोतेत्तिन
 नवी अडिये, सुण साहेली ॥ १ ॥ वेनी नायतणी पचमी
 कहीये, राई ततो आऽणे नपि रहिये, नहिंतो नाग नीरुग्णे
 विरालो, शु तरसे जे मारा चालो, सुण साहेली ॥ २ ॥
 रायण छटतो आरी पांची, पुरीपरमुळीलावोशोधी,
 पफानरुद्रुएरुचित्ते, वलीशान्करनवनरीरीते, सुण साहेली.
 ॥ ३ ॥ शील सातम टीन वाशी ग्वावु, शीतला
 माता दर्गने जावु, टार्या ठे चूलोम आजे, शीतलाने आलो-
 ट्वा काजे, सुण साहेली ॥ ४ ॥ वली श्राद्ध दिवस च्यारे
 आये, फाफा कही कागने बोलाये, ब्राह्मणने तेडी घेर लावे,
 भली रसवती पोपे भावे ॥ सुण साहेली ॥ ५ ॥ एवी लौकिक
 करणीने करती, उपदेश करे घरे घेर फरती, इम जन बहुलाने
 भरमावे, ते बोधी बीजने कम पावे ॥ सुण साहेली ॥ ६ ॥
 जे मिथ्या दृष्टि मन धरसे, जे मिथ्या पोने आन्तरसे, चडगति
 ससारमा रडवडसे, ती भवसायरथी त्रेम तरसे ॥ सुण साहेली.
 ॥ ७ ॥ वेनी जैन धर्मने पामीजे, तेमा पर्य घणा एम जाणीं
 जे, जे कल्पवृक्ष मनमा भाव, ते आरु धतुर पासे नवी जावे ॥
 सुण साहेली ॥ ८ ॥ एवी लौकिक करणीने छोटी, दया
 धर्म करो तमे मद मोडी, जेथी भयसिंधु सदेजे तरसो, तमे
 शिरमणी झट पट वरसो ॥ सुण ॥ ९ ॥

गहुली २ जी

जीरे मिथ्यात्व पर्वने परिहरो, जिरे मिथ्यात्व पापनु
 मूळरे, गुणवती बेनी मिथ्यात्व पर्वने परिहरो ॥ १ ॥ जीरे
 मिथ्यात्व पर्णे नही आपडा, जीरे मिथ्या वे सुख तणी हाणरे ॥
 गुणवती ० ॥ २ ॥ जीर मिथ्यात्वथी नर बहु भमे, जीरे मि
 थ्यात्व नररुनु द्वाररे गुण ० ॥ ३ ॥ जीर मिथ्यात्व निमित्ते
 परिहरो, जीरे मेवा मीठाइना थालरे ॥ गुण ० ॥ ४ ॥ जीरे
 वासी अन्न न राखीये, जीरे थाय बेइन्द्री तणी हाणर ॥ गुण ०
 ॥ ५ ॥ जीरे शीतलापूजेसिद्धिनवीमले, जीरे प्रभु पूजे
 मुक्ति पमायरे ॥ गुण ० ॥ ६ ॥ जीरं टुद्धपरपरावारीने, जीर
 जाणीये गुरु मुख भेदरे, गुण ० ॥ ७ ॥ जीरे दीगो लड कुये
 कापडो, जीरे शास्त्रो तणा जुवो पाठरे, गुण ० ॥ ८ ॥ जीरे
 मिथ्यात्वथी कोण पापीया, जीरे उंच गति तणा ठामरे ॥
 गुण ० ॥ ९ ॥ जीरे मिथ्यात्वे समस्त नधि रहे, जीरे थाये
 शिव सुख हाणर, गुण ० ॥ १० ॥ जीरं बडाला मळी सह
 विनये, जीरे नय पडिये मिथ्यात्वीना फदरे, गुणवती ॥ ११ ॥
॥ गहुली ३ जी ॥

सखी शील सातम दान आज, मनमा धरजोरे माना
 शीलतायेर पूजन, तमेपरिहरजोरे ॥ १ ॥ नथी जैनतणी

ए रीत, तत्र विचारोरे ॥ तजी मिथ्यात्व शुभ चित्त, कलक
 निवारोरे ॥ २ ॥ गुरुमुग्धेमुणिजीनवाण, चित्त नवी
 धाररे ॥ गृही मिथ्यावृद्ध विवाद, जम वाररेरे ॥ ३ ॥ नयी
 शास्त्र कट्टियेराग, गीतलाने पूजोरे, प्रभु निभुवन तिलकसमान,
 जगपा न दुजोरे ॥ ४ ॥ करो प्रभु सेवा धरी चित्त, निर्मट
 यःपरे ॥ लड सामग्री भग्निछाव, देहरे जड्येरे ॥ ५ ॥
 विमलजलकल्पाहाय, न्हावणकरावोरे ॥ घशी चदन
 माहि वरास, प्रभुने चढावोरे ॥ ६ ॥ गुयी मुगधी फल
 माल, जिन कठे ठावोरे ॥ धूप धारुं करो हितकाज, कर्मने
 पालोरे ॥ ७ ॥ करो दीपक पूजा रसाल, केवल लहीयेरे ॥
 गृही अक्षत उज्वलसार, स्वस्तिक करीयेरे ॥ ८ ॥ नेवेद्य
 भरि सोना घाल, प्रभु पासे रहीयेर ॥ द्रव्यभावयी भावना
 भाव, पापने हरियेरे ॥ ९ ॥ उत्तम जाति फल लावी, प्रभु
 आगे धरीयेरे ॥ फल्धी मागो फल सार, प्रिनति करीयेरे ॥
 ॥ १० ॥ टाले जे लौकिक मिथ्यात्व, याशो ठे मेदेरे ॥ लेखा
 शिवरमणीराज्य, गुरु गुण गावरे ॥ ११ ॥

॥ प्रभुजीने पोंखणा वखते ढाल ॥

जीरे इद्राणी पुडे वेवाणने, जोरे शी कगी करणी तमे
 एह, प्रभुने केम पोंखीया ॥ जोरे जमे तेहमा समझ्या नही.

जीरे कारण टाखमो तेह, मभुने केम पॉखीया ॥ १ ॥ जीरे पहलु त धोसरु आठर्यु, जीरे धोसरु गाडले होय, धोसरे केम पॉखीया, जीरे ससारे धोसर नाखीयु, जीर ससारथी पामे पाररे, धोसरे एम पॉखीया ॥ २ ॥

॥ पॉखणुं वीजु ॥

जीरे इद्राणी पुठे वेवाणने, जीर मुसठु खाडणीए होय, मुसले कम पॉखीया, जीरे मुसले तदुल काढीण, जीरे ससारथी गुण काढो जोय, मभुने एम पॉखीया

॥ पॉखणु त्रीजु ॥

जीरे इद्राणी पुठे मयाणने, जीरे रवैयो गोडीएहोय, रवैय केम पॉखीया, जीरे रवैयेमारणनीपजे, जीरे मगलु कारी ए जोय, मभुने एम पॉखीया

॥ पॉखणु चोथु ॥

जीरे इद्राणी पुठे वेवाणने, जीरे प्राक ते रेंटीये होय, प्राके केम पॉखीया, जीरे प्राके ते मुतर नीपजे, जीरे ससारथी अर्थ काढो सोय, प्राके एम पॉखीया

॥ पॉखणु पाचमु ॥

जीर इद्राणी पुठे वेवाणने, जीरे सरीयो ते डुडानेहोय, सरीये

कैय पौखीया ॥ जीरे सरीये ते वस्तु सर्व नीपजे, जीरे मंगळ धर्मियो
 हाय, सरीये एम पौखीया ॥ ६ ॥ जीरे पांच मंगळ एम परवर्ता,
 जीरे आदरे सपत्रा लोक, प्रभुने एम पौंग्वीया, जीरे तेह कारण
 इहो क्युं, जीरे श्रुजाणे देवता लोक, प्रभुने एम पौखीया
 ॥ ७ ॥ ॥ सपुण ॥ भुलचुक मिन्नामी दुकड ॥

॥ अथ राजुलनो विजणो ॥

आव्या आंव्या उनाळाना दहाडाके राजुल वीजगो
 सनालावी, मारा नेमने ढोल वायके ॥ प्रभुने चरणे शिश नपा
 विक ॥ राजुल ॥ १ ॥ राजुल कहे सुणो सहियर मारीने ॥
 वीजणो शा कारण हुलावु क, स्वामीने मूकी गिरनारे जावुके,
 ससारं छडी मुनिवर यावुके ॥ राजुल ॥ २ ॥ चद्रा कहे छे
 राजुल वाळाके, सरळ स्वभापि न होये काळाके, ते कारणे स्वामि
 तजीयेके ॥ वीजो वर तुमे मनमा भजीयेक ॥ ३ ॥ राजुल ॥
 राजुल कहे वेनी घोळोम खोटांका ॥ स्वाम वस्तुमा गुणछेमो गके,
 एतो व्रण भुवननो स्वामिके ॥ हुतो पूरण पुन्ये पामीक ॥ ४ ॥
 ॥ राजुल ॥ जीनजी जीवत्यामनआणिक ॥ ग्यडो फरी
 चाल्या पाप जाणिक, पशुआ उगारी दान तेदीवुक ॥ इतर
 मन वांचित फळ लीधुंके ॥ ५ ॥ राजुल ॥ माता →

सुणो सुजाणके॥तुमे तो अनत गुण भगवानके, माहरी आ
 पुरो एम्बारके ॥ कयापरणीनेवानवपारोके ॥६॥ राजु
 पुन वहे सुणो माता अमाग्गि॥पग्णु नही मनुयन्ती नारीके
 मेतो शीव नारी मनमा थारिके ॥ सुजने लागे छे अति प्य
 रिके ॥ ७ ॥ राजुल ॥ राजुल कहे सुणो मजनी अमारोके
 हुतो नवभरकरो नारीक ॥ गीजी फोड मनमा थारिके
 जाणु शीववधू नारी धुतारीक ॥ ८ ॥ राजुल ॥ जीन
 दान सबरसरी दोधुक ॥ भविषणनु फारज सिभ्युक ॥ सज
 जादव जान लेइ बलियाक ॥ केरल पापी गिवपुनी बरियाक
 ॥ ९ ॥ राजुल ॥ राजुल दान पुय नित करीक ॥ नेम
 ध्यान रुदेमा धरतीके ॥ सजम लेइ गिरनारे चडीपाने
 तोडी अष्ट करमता दलियके ॥ १० ॥ राजुल ॥ आवो रीज
 जे फोड गाशेक ॥ तस घेरमनयलित सुव थाशेके ॥ आ
 विजेइणीपर बोलेक ॥ नहि मारा नेम राजुलने तोलेक ॥११
 ॥ राजुल ॥ जगमाथया २ नर नारिके ॥ ह्या जन्म थ
 ब्रह्मचारिके ॥ थया द्वपतिए वनपारीके ॥ पाम्या शिव
 वेह सुखनारीक ॥ १२ ॥ राजुल ॥ इति सपूर्ण ॥

